मुल्य रु। ५-००

सलंग अंक ७५ जुलाई-२०१३

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख

श्री स्वामिनारायण मंदिर बायरन (अमेरिका)में श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपो द्वारा मूर्ति प्रतिष्ठा विधि

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१-२) श्री स्वामिनारायण मंदिर कलिवलेन्ड के पांचवे पाटोत्सव प्रसंग पर हजारों हरिभक्तों की उपस्थिति में श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपों द्वारा मूर्तियों का अभिषेक किया गया ।(३) शिकागो मंदिर में सत्संग सभा ।(४) घाटलोडिया मंदिर (अमदावाद) में पारायण प्रसंग की सभा में दर्शन देते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री तथा आशीर्वाद देते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री । (५) गांधीनगर से.-२३ मंदिर में एकादशी के जलदान प्रसंग पर अन्नकूट दर्शन ।(६) न्यु राणीप मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर अन्नकूट की आरती उतारते हुए प.पू. महाराजश्री । (७) महादेवनगर सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री । (८) नारायणघाट मंदिर में फूलों से अलंकृत देवदर्शन ।(९) माणसा मंदिर में चन्दन चर्चित देवों का दर्शन ।(१०) अमदावाद मंदिर में श्री हनुमानजी तथा श्री गणपतिजी का फुलों से अलंकृत दर्शन ।(११) आदरज मंदिरमें अन्नकूट दर्शन ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - ७ ● अंक : ७५
जुलाई-२०१३

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०६
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०७
०३.	धर्म भक्ति की तपश्चर्या	०६
०४.	गुरुवर्य धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री	०८
०५.	प्रेम की पराकाष्ठा	१०
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१२
०७.	सत्संग बालवाटिका	१४
०८.	भक्ति सुधा	१६
०९.	सत्संग समाचार	१९

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● वंशपारंपरिक देश में ५०१-०० ● विदेश १०,०००-०० ● प्रति कोपी ५-००

॥ अस्मदीयम् ॥

परमात्मा द्वारा रचित इस सृष्टि में मनुष्य नई-नई टेक्नोलोजी का आविष्कार करता जा रहा है। कुदरत ने जिन जंगलो को सजाया है उसे काटकर सीमेन्ट के बिल्डिग का जंगल बना रहा है। जिस जंगल में भगवानने प्राणियों को मुक्त रहने की व्यवस्था की है वहाँ पर वृक्षों का निकंदन हो रहा है। पहाड़ों से निकलती नदियों की तथा झरनो की जहाँ सुमधुर आवाज होती थी वहाँ पर उन नदियों के तथा झरनो के प्रवाह को रोककर बड़े बड़े बांधबनाये जा रहे है। ऐसा होनेपर प्रकृति प्रकोप होता है । उत्तराखंड में पवित्र तथा पौराणिक तीर्थ केदारनाथ गौरीकुंड, चमौली, गोविंदघाट इत्यादि अनेकों स्थलो में जून मास में मेघ तांडव हुआ। बादल फाटे, नदियां उफन के बहने लगी। भूस्खलन से पहाड टूटे। यह समय यात्रिकों के दर्शन का समय होता है। हजारो यात्री मौत के मुख में चले गये। अरे ! केदारनाथ मंदिर के परिसर में लासों का ढेर हो गया। हमारे परिवार निराधार हो गये - हजारो लोग भूखे प्यासे पहाड़ ऊपर पड़े रहे। जब प्रकृति कोप करती है तब सबकुछ पायमाल हो जाता है। अनेक लोग अभी भी पहाडो में फंसे हुये हैं। अपनी भारतीय सेना के सैनिकों को लाख-लाख सलाम। अपने देश वासियों के जीव बचाने के लिये स्वयं के जीवन की परवाह नहीं करते। यह वही हिन्दुस्तान देश है। यह वहीं संतो की, वीरों की परा क्रमियों की भूमि है जहाँ पर स्वतंत्रता के लिये अनेकों लोग सहीद हुये। पूरा देशवासी एक परिवार रुप होकर अंग्रेजो को देश से बाहर करके शहीदों का बलिदान का ऋण चुक्ता किये। यह भारत देश हमारी मातृभूमि है। ऐसे संकट समय में ऊँच-नीच, जाति के भेदभाव को छोड़कर एक दूसरे के सहयोग में दौड़पडते हैं। प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से अपने हरिद्वार तथा बद्रिनारायण में फंसे यात्रिकों को रहने खाने की सुविधा की गयी है।

उत्तराखंड के विनाशक तांडव में मृत्यु को प्राप्त सभी जीवों को भगवान शांति प्रदान करे तथा उनके परिवार पर आपति में धैर्य तथा बलप्रदान करें। इसके साथ जो वहाँ फंसे हुये है या खो गये है वे सभी अपने परिवारजनोंको अतिशीघ्र मिले ऐसी परम कृपालु परमात्मा इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण के चरणों में प्रार्थना है।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जून-२०१३)

१-२ श्री स्वामिनारायण मंदिर सामग्रा (कच्छ) पदार्पण ।

३ श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा खातमुहूर्त प्रसंग पर पदार्पण ।

५ श्री स्वामिनारायण मंदिर झुलासण पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

६ श्री स्वामिनारायण मंदिर खोखरा महेमदावाद पुनः प्राण प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

७ माणेकपुर गाँव में कथा प्रसंग पर पदार्पण ।

९-१० श्री स्वामिनारायण मंदिर माधापर (कच्छ) पदार्पण ।

११ श्री स्वामिनारायण मंदिर न्यु राणीप मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटी आदरज (गांधीनगर) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर इडर पाटोत्सव प्रसंग पदार्पण ।

१६ जून से ३ जुलाई तक श्री स्वामिनारायण मंदिर कलिवलेन्ड (अमेरिका) ५ वें पाटोत्सव तथा श्री स्वामिनारायण मंदिर बायरन मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा प्रसंग पर तथा सत्संग प्रचार हेतु विचरण ।

प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जून-२०१३)

१७ जून से ४ जुलाई तक अमेरिका में कलिवलेन्ड श्री स्वामिनारायण मंदिर के ५ वें पाटोत्सव तथा श्री स्वामिनारायण मंदिर बायरन मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा प्रसंग पर तथा सत्संग प्रचार हेतु पदार्पण ।

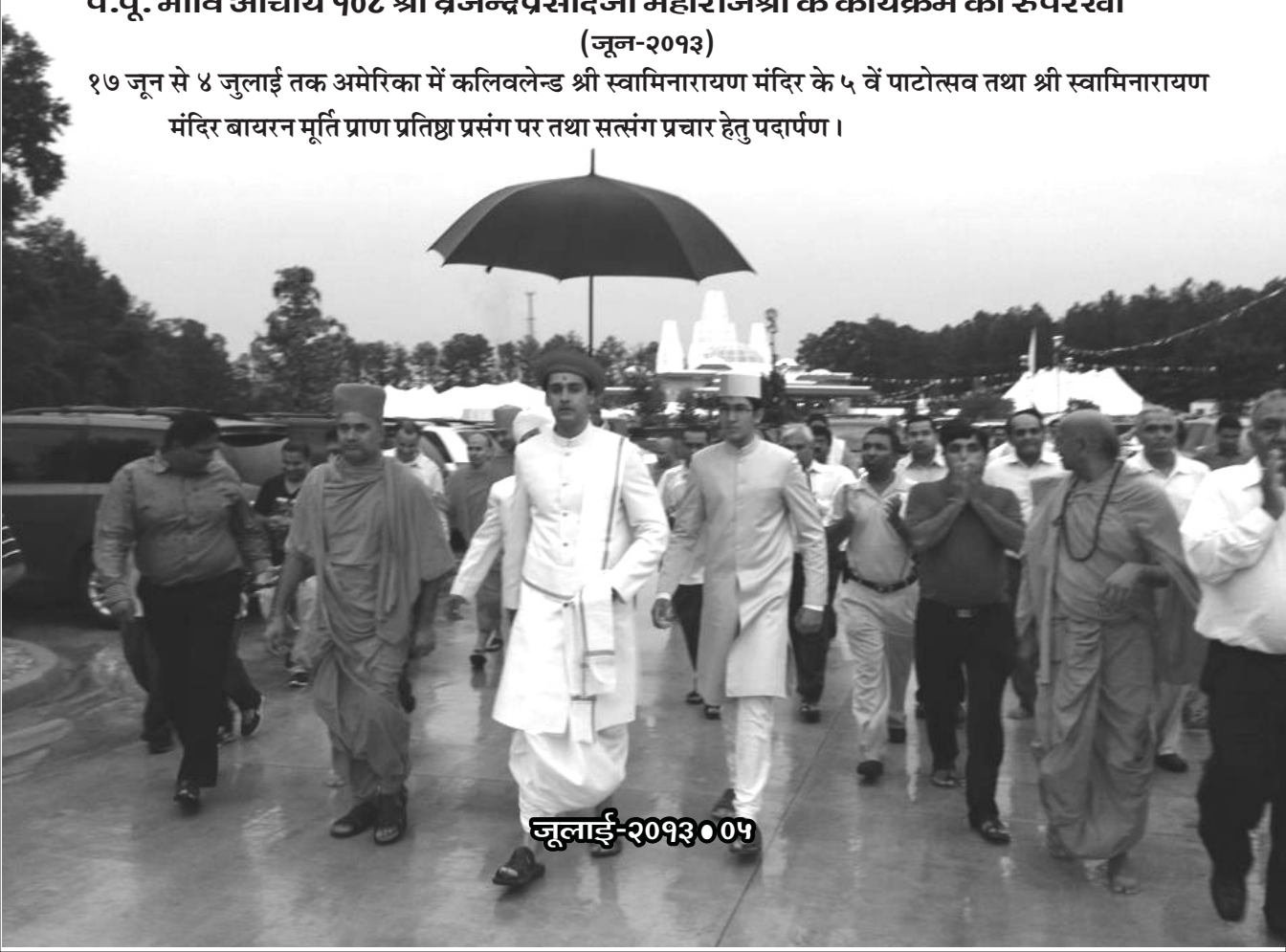

धर्म भक्ति की तपश्चर्या

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुर धाम)

आदि काल में सृष्टि के आरंभ में विराट नारायण के पुत्र जगत स्त्रष्टा ब्रह्माजी के दाहीने हाथ में से धर्मपुत्र रुप से प्रगट हुए थे । ब्रह्माजी के पुत्र दक्ष प्रजापति की पुत्री ''मूर्ति'' का धर्म के साथ विवाह हुआ । पिता ब्रह्माजी ने पुत्र धर्म को मानवसृष्टि के विस्तार की जिम्मेदारी सोंपी । धर्म तथा मूर्ति अनादि युगो से भगवान के जन्मदाता माता-पिता थे । इसीलिए मानव सृष्टि के विस्तार में रुचि नहीं थी । पिता की आज्ञा का पालन करना भी पुत्र का धर्म था । इसीलिए परब्रह्म को पुत्र स्वरुप जन्म देने का संकल्प दोनो दंपतिने किया । भगवान को जो अति प्रिय है एसी तपश्चर्या करके भगवान के पास पुत्र रुप से प्रगट होने का संकल्प करके धर्ममूर्ति दोनों पश्चिम भारत की पवित्र पावन साबरमती (गंगा) के किनारे पर्णकुटी बनाकर तपश्चर्या शुरु की । वर्षो बीत गए । ''ॐ नमो नारायणाय'' नाम के मंत्र का जप करने लगे । ठंढी, गरमी, धूप, बारिश जैसी पीड़ाए सहकर उससीडिगे नहीं । जहाँ वर्तमान आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज के कृपापात्र गवैया स्वामी केशवजीवनदासजीने भव्य महामंदिर बनावाया है । वही पर धर्ममूर्ति एक पाँव अडी़ग रहकर तप करते रहे । भगवानने बहुत परीक्षाएँ ली इस प्रकार सत्ययुग का अंत नजदीक आ गया था । तप करते हुए १२ करोड़ वर्ष बीत गये । देह सुख गये । उस समय परब्रह्म परमात्मा भगवान पुरुषोत्तम नारायण चतुर्भुज दिव्यस्वरुप के साथ प्रगट हुए । प्रभु ने धर्ममूर्ति से कहा । माँगो माँगो । आप की कठीन तपश्चर्या से बहुत प्रसन्न हूँ । जो मांगोगे वह दूंगा । धर्ममूर्ति बोले की आप जैसे पुत्र की प्राप्ति हो । भगवानने तथास्तु कहा : दोनो प्रसन्न हो गये । कठिन तपश्चर्या का अंत हुआ । परब्रह्म भगवान धर्ममूर्ति के उदर से चार स्वरुप में उतराफाल्गुनी नक्षत्र फाल्गुन शुक्लपक्ष पूर्णिमा को मध्याहन समय में प्रगट हुए । देवोने पुष्पवृष्टि की । माता-पिता ने एक के बाद एक जन्म नाम-करण-यज्ञोपवित आदि संस्कार किये । पुत्रों का लालन - भक्तिभाव पूर्वक गिया । हरि, कृष्ण, नर, नारायण चारो पुत्र को इस प्रकार नाम दिये गए । एक साथ ही प्रगट हुए थे । इसीलिये छोटे बड़े का कोई भेद नहीं पडा । माता-पिता की आज्ञा लेकर चारों पुत्रों में से हरि वैकुंठ में पधारे । कृष्ण गोलोक में पधारे । नरनारायण दोनो बदरिकाश्रम में तपश्चर्या करने गये । धर्म तथा मूर्ति दोनो नरनारायण के साथ बदरिकाश्रम में कलाप नाम के गाँव में रहकर तप कर रहे थे । नित्य सुबह नरनारायण भगवान दर्शन देने के लिये पधारते थे । धर्ममूर्ति आदि अनंत मुक्तों को दर्शन करने के लिये प्रतीक्षा हेतु सभा की जाती थी । पुराणो के अनुसार नारायण स्वरुप में ''कुचि'' नामक दैत्य ने (९९९) कवच काटे थे । क्योंकि उस देत्यने ब्रह्मा से वरदान प्राप्त किया था कि जो कोई एक हजार वर्ष तप करेगा तथा एक हजार वर्ष तक लड़ाई करेगा वही एक कवच तोड़ शकेगा । नरनारायण ने तप तथा लडाई करके कुचि दैत्य के ९९९ कवच तोड़कर बाकी एक कवच बचते ही भयभीत होकर पलायन हो गया । कुंता पुत्र के स्वरुप में कर्ण नाम से जन्म लिया । उसे जन्म से ही कवच धारण था । इसका हजारवाँ कवच श्रीकृष्ण तथा अर्जुन ने मिलकर तोड़ा ।

बदरिकाश्रममें सत्ययुग से लेकर कलियुग के पांच हजार वर्ष पर्यन्त धर्ममूर्ति ने अखंड तपश्चर्या की ।

कलियुग में अक्षराधिपति परब्रह्म परमात्मा को अनेक जीवों का कल्याण करने तथा प्रेमी भक्तों द्वारा सेवा करने की ईच्छा हुई । तो दुर्वाशा ऋषि के साथ की लीला करके अपने ही स्वरुप बदरिकाश्रम में नरनारायण स्वरुप में स्थापित हुए । पुनः धर्मदेव ईटार

पांडे गाँव में प्रगट हुए तथा मूर्ति छपैया गाँव में प्रगट हुई। दूसरे संतान के रुप में सर्वावतारी परब्रह्म भगवान धर्म भक्ति के उदर से प्रगट हुए।

धर्म तथा मूर्ति और नरनारायण भगवान इस संप्रदाय की सफलता का आधार है। धर्म मूर्ति तथा नरनारायण की तपश्चर्या के माध्यम से इस कलयुग में कृपा प्रदान करते है। सत्संग भक्तों के धर्मज्ञान-वैराग्य भक्ति उपासना का रक्षण तथा अभिवृष्टि नरनारायणदेव के तप के कारण है। इसीलिए तो सर्व प्रथम मंदिर अहमदाबाद में माता-पिता की मूर्तियों को स्थापित किया।

कुछ मंदिरो में नरनारायण के नाम से लिखा गया है तो कहीं रणछोड त्रिकमराय लिखा गया है। अहमदाबाद-भुज-जूनागढ के मंदिरो में तो मध्य मंदिर में भी बिराजमान है। वचनामृत अहमदाबाद- ७ - ९, सारंगपुर-१६, गढ़डा प्रथम-४८, जेतलपुर-५ अवश्य वांचन करिये तो श्री नरनारायण भगवान की प्रधानता के विषय में श्रीजी महाराज के प्रसादी के यथार्थ समझ सकेंगे।

धन्य हैं धर्म मूर्ति को १२ करोड़ वर्ष की कठीन साधना के हेतु। छपैया में रहे तब भी तपश्चर्या से भी अधिक कष्ट सहन करके भगवान की प्राप्ति हेतु अडिग रहे। संप्रदाय के तमाम अनुयायी श्रीजी महाराज के स्वरुप श्री नरनारायण भगवान तथा धर्म मूर्ति की पूजा-दर्शन सर्व प्रथम करे तो इष्टदेव तत्काल प्रसन्न होते हैं। मनुष्य भी मा-बाप से अच्छा व्यवहार करे तो भी प्रभु प्रसन्न होते हैं। माता-पिता को छोड़कर भगवान को प्रसन्न करेंगे तो भी प्रसन्नता दुर्लभ है। धर्मज्ञान- वैराग्य भक्ति उपासना आत्मनिष्ठा आदि धर्म भक्ति नरनारायण के तप साधना में मिश्रित हो तो ही निर्विध्न सफलता अवश्य मिलेगी। वचनामृत शास्त्रो, पुराणों के मतानुसार नरनारायण के विषय में अधिक विस्तार आगामी अंक में लिखा जायेगा।

श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद श्री नरनारायणदेव देश स्कीम कमेटी के सदस्य प.भ. जी.के. पटेल (महेसाणावाला) समय की व्यस्तता के कारण तथा अन्य सत्संगी को सेवा का लाभ मिले इस शुभ हेतु से स्वच्छया सभ्य पद से त्यागपत्र दिये है। उनके स्थान पर खूब सेवा भाव वाले प.भ. श्री रसिकभाई अंबालाल पटेल (मोखासणवाला) को स्कीम कमेटी ने सर्वानुमते सदस्य स्वीकार किया है। निवृत सदस्य प.भ. जी.के. पटेल ने भी निष्ठापूर्वक अपने समय में काम किया था। समस्त श्री नरनारायण देव देश के सभी सत्संग सजने दोनो हरिभक्तों के सेवा की प्रशंसा की है।

अपने बद्रीनारायण श्री स्वामिनारायण मंदिर में - उत्तरांचल में फंसे हुए यात्रिकों के लिये व्यवस्था

श्री नरनारायणदेव देश के श्री स्वामिनारायण मंदिर बद्रीनाथ में (बस स्टेन्ड के पास) प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के बद्रीनारायण मंदिर के महंत शा.स्वा. गोलोकविहारदीसाजीने बद्रीनारायणधाम में यात्रा के लिये गये हुए श्रद्धालु यात्री उत्तराखंड में हुए विनाशक तांडव तथा पर्वतों के गिरने से मार्गावरोधहो गया था। जिससे गमना गमन का मार्ग बन्द हो गया, परिणाम स्वरुप सभी बद्रीनारायण में फंस गये थे। जिससे अपने मंदिर में १५०० जितने यात्रियों को आश्रय दिया गया था। जिससे सभी को आवास तथा भोजन की समुचित व्यवस्था की गयी थी। संत गोलोक स्वामी का मंडल सेवा में दत्तचित्त होकर सभी की देखभाल कर रहे थे।

प.पू. आचार्य महाराजश्री बद्रीनारायण मंदिर के महंत स्वामी को विशेष सूचना दिये हैं कि चाहे जैसा भी यात्री हो उसे अपने मदिर में आश्रय दीजियेगा। उसकी सम्पूर्ण व्यववस्था भी कीजियेगा। जिससे महंत स्वामीने भी प्रत्येक यात्रियों के रहने की तथा भोजन की समुचित व्यवस्था की है।

गुरुवर्य धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री

- प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल (अमदावाद)

सभी जीवों के आत्यन्तिक कल्याण के लिये भगवान स्वामिनारायण अक्षरधाम में से पृथ्वीपर पधारे । इसके साथ ही सभी को तीन रुप में इस पृथ्वी पर विचरण करने का वचन भी दिये । जिसके अनुसार सर्व प्रथम अमदावाद में श्री नरनारायणदेव तथा अन्य आठ मंदिरो में मूर्ति प्रतिष्ठा करके अपने स्वरुप को प्रतिष्ठित किये । इसके बाद शिक्षापत्री की रचना करके उसमें नीति-नियमों का उल्लेख करके उसके जैसा आचरण करने की आज्ञा किये । दो गादी स्थानों पर अपने स्वरुपों को धर्मवंशी आचार्य को प्रतिष्ठित किये । इस तरह देव, शास्त्र, धर्मवंशी आचार्य इन तीन रुपों में श्रीहरि आज भी सत्संग में विराजमान है।

इस कलिकाल में सच्चागुरु मिलना बड़ा कठिन है । स्वयं श्रीहरिने नीलकंठ स्वरुप में वचविचरण करते हुये ११ वर्ष तक तपस्या करते रहे । बाद में स.गु. रामानंद स्वामी जैसे समर्थ गुरु की प्राप्ति हुई । हम सभी के लिये स्वयं श्रीहरिने गुरु को साक्षात् प्रदान कर दिया है । शि.प. श्लोक ३ में लिखते है कि इन धर्मवंशियों को दत्तकपुत्र लेकर ''सर्व सत्संगियो ना आचार्य ने विशे स्थापन कर्या छे ।'' हम श्रीहरि के सच्चे आश्रित है इसलिये हमारे गुरु के रुप में एकमात्र धर्मवंशी आचार्य होना आवश्यक है । श्लोक सं. ६२ में श्रीहरिने बताया है कि श्रीकृष्ण के जिस स्वरुप को धर्मवंशी आचार्य दिये हो अथवा जिस स्वरुप की प्रतिष्ठा धर्मवंशी आचार्य किये हों वही स्वरुप सेवा के योग्य है ।

इसलिये हमें भी ध्यान-उपासना, सेवा, भक्ति इत्यादि श्रीकृष्ण के स्वरुप की ही करनी चाहिये, जिस स्वरुप की प्रतिष्ठा धर्मवंशी आचार्यश्री किये हों ।

श्रीहरिने धर्मवंशी आचार्य पद की स्थापना करके अपने स्वत्व की स्थापना भी उनमें करके देश विभाग का लेख लिखवाया । इन्हीं आचार्य की आज्ञा में वर्तन करने की आज्ञा का पत्र भी लिखवाये । साधु, ब्रह्मचारी, पार्षद, सत्संगी को भी आचार्य की आज्ञा में रहने का निर्देश किये । श्री धर्मवंश के दोनो आचार्य की धर्मपत्नी के लिये एक आज्ञापत्र लिखवाये, जिस में समस्त सत्संगी एवं त्यागी मात्र उनकी आज्ञा में अपने वर्तन करें । यदि कोई आचार्य या आचार्य पत्नी (गादीवाला) की आज्ञा का पालन नहीं करेगा तो सुख-शांति की प्राप्ति नहीं होगी, दुःखी जीवन होगा ।

ऐसे गुरु हमें स्वयं श्रीहरिने दिया है और उन्होंने यह वरदान भी दिया है कि इनकी जो सेवा करेंगे उन्हे मनोवाच्छित फल की प्राप्ति होगी । इसके अलांवा शि.प. श्लोक ७१ में ऐसी आज्ञा भी किये हैं कि अपनी शक्ति के अनुसार धर्मवंशी आचार्य की सेवा पूजा करनी चाहिये । स.गु. निष्कुळानंद स्वामी ने लिखा है कि -

माटे धर्मकुल मानजो सहु, करजो एनी सेवा ।
अन्य जन सेवा एह नहि, एछे जांबाजो मोटा देव ।
मनवांछित वात मलशे, बड़ी सेवतां एना चरण ।
ए छे अमारी आगन्या, सर्वे कालमां सुरव करण ।
एने पूजे हुं पुत्राण्ये रे, ते तो जरुर जनमन जाणो रे ।
एनुं जेणे कर्युं सनमान रे, तेणे मारुं कर्युं छे निदान रे ।

हम सभी के कल्याण हेतु श्रीहरिने आज्ञा की है कि अपने आचार्य के साथ कभी विवाद नहीं करना चाहिये । इसलिये कि वे श्रीहरि के अपर स्वरुप है । उन में श्रीहरि अखंड निवास कर रहे हैं । वे सदैव हम सभी के हित की भावना करते रहते है । सदैव मंगल के लिये सोचते रहते हैं । इसलिये हमें भी प्रभु की आज्ञा का पालन करके देव तथा आचार्य में एकात्मभाव समझकर दिव्यबुद्धि रखकर उत्तम वर्तन करना चाहिये । मनुष्य भाव नहीं आने देना चाहिए । आज के युग अनुसार मंदिर की व्यवस्था में भले किसी पद पर हो फिर भी आत्यंतिक कल्याण तो श्रीजी महाराज के हाथ में है यह भाव कभी भूलना नहीं चाहिए । इसलिये श्रीजी महाराज की आज्ञानुसार वर्तन करने में हित है ।

श्रीहरि के अपर स्वरुप आचार्यश्री को जब गादी पर बैठाने की विधिहोती है तो ३३ करोड देवता भी सूक्ष्म रुप

धारण करके प्रभु के दर्शनार्थ पधारते है। क्योंकि वे तो अनंतकोटि ब्रह्मांड के अधिपति हैं। इन दोनो गादी के जिस में श्री नरनारायणदेव एवं श्री लक्ष्मीनारायणदेव देश की गादी समाविष्ट है, इन दोनो गादी की स्थापना स्वयं श्रीहरिने किया है। हम कितने भाग्यशाली है कि इन स्वरुपों का हमें प्रत्यक्ष प्रतिदिन दर्शन होता रहता है।

जगत में आज कलियुग के धर्मअनुसार क्षुद्र जीवों को भी गुरु बनने का महारोग लग गया है। शिष्यों की अपेक्षा गुरुओं की संख्या अधिक है। सभी को गुरु बनने की महत्वाकांक्षा होने लगी है। शतानंद स्वामी ने सत्संगिजीवन प्र. ४, अ. ८२ श्लो. ९ में कहते है कि जिस तरह अमात्यकृत पाप को राजा प्राप्त करता है, जिस तरह पत्नीकृत पाप को उसका पति प्राप्त करता है उसी तरह शिष्यकृत पाप को गुरु प्राप्त करता है। धर्मवंशी आचार्य तो श्रीजी वचन अनुसार अपने गुरु हुए। इसलिये वे हम सभी के पाप को ग्रहण करने में समर्थ है। लेकिन क्षुद्र जीवों से यह पाप ग्रहण करना संभव नहीं है। ऐसा विचार करके आनंद के साथ धर्मवंशी आचार्य को गुरु बनाने में हित है। श्रीजी कहते हैं -

जेय अमारुं कुल मनाथो रे, तेने तुल्य बीजु केम थाशे रे।
माटे विचारी ने बात कीधी रे, धणुं समजीने गादी दीधी रे।

(पु. प्रकाश प्रकार ३९ कडी ८)

जगत में दूसरे कोई भगवान या आचार्य में श्रीहरि द्वारा स्थापित धर्मवंशी आचार्य में बहुत अंतर है। एक तो इस जीव को कल्याण के मार्ग से गिराते है दूसरे तो लक्ष्य मात्र इस जीव का आत्यंतिक कल्याण करते हैं। ऐसा विचार करते रहते है। एक श्रीजी के वचने के विरुद्ध आचरण करते है दूसरे श्रीजी की आज्ञा से गादीपति हुये है। कल्याण यहाँ बिकता नहीं है। कल्याण तो प्रगट प्रभु के आश्रय में मिलता है। ऐसे प्रगट प्रभु का आश्रय धर्मवंशी आचार्य श्री द्वारा मंत्रदीक्षा के विना नहीं होता। इसलिये हमें भी अपने कल्याण के लिये धर्मवंशी आचार्य की शरणलेनी चाहिये। यही सार है।

श्रीहरिने बताया है कि - पु.प्रकाश प्र. ३९ कडी ५-६

मारा धाममां अववा सहु रे, एवा कर्या उपाय में बहु रे,
सर्वे उपाय कीधा छे सारा रे, तेमा तरसे जीव अपारा रे।
पण छेल्लो छे आजे उपाय रे, बहुजीव तरसे आमांय रे।
धर्मवंशी आर्चज धार्या रे, गुरु करीने गादीए बेसार्या रे।

श्रीहरि के अथक परीश्रम का यह फल देखकर बचन को हृदय में धारण करके सभी संत, हरिभक्त को अतिशय धर्म लाभ प्राप्त हो इस आशय से इस वर्ष की गुरु पूर्णिमा ता. २२-७-२०१३ को श्री नरनारायणदेव देश पूर्व पीठाधिपति प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का गुरु पूजन अति पवित्र ऐसे मूली धाम देश में श्री राधाकृष्णदेव के मंदिर में आयोजित किया गया है। जिनके पूजन से साक्षात् श्रीहरि का पूजन होता है। यह वात सभी हरिभक्त जानकर वहाँ पूजन का लाभ लेने अवश्य पधारें।

मनुष्य देह क्षणभंगुर है ऐसा समझकर प्रतिक्षा करने की जरुरत नहीं है। श्रीजी तथा संतो की वाणी का लाभ लेने के लिये धर्मवंशी आचार्य में विश्वास रखखर उन्हें अन्न वस्त्रादिक अर्पण करके इहलोक तथा परलोक सुधार लेना चाहिये। धर्मकार्य में सम्पत्ति का उपयोग देवी सम्पति हो जाती है। आजे ऐसा योग बना है - देव कोटि के पू. बड़े महाराजश्री के पूजन का अवसर जाने नहीं देना चाहिये।

अमदावाद श्री नरनारायणदेव के आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसाजी महाराजश्री की स्थापना करके श्रीहरिने ब्रह्ममुनि को अ.प्र. श्री की सेवा में रखा, जो आचार्य महाराजश्री के आज्ञांकित होकर जीवन भर धर्मकुल की सेवा करते रहे। ऐसे महान संत के मूलीधाम में इतने वर्षो के बाद पुनः धर्मवंशी आचार्यश्री का पूजन अर्चन होगा, जिस से इस अद्वितीय प्रसंग में अचूक उपस्थित रहना चाहिये।

आप सभी त्यागी-गृही की सेवा में मूली मंदिर के महंत शा.स्वा. श्यामसुंदरदासजी तथा अन्य संत मंडल तत्पर है। सभी को हृदय पूर्वक जयश्री स्वामिनारायण।

प्रत्येक मंदिर के महंतश्री, व्यवस्थापकश्री को नम्र निवेदन है कि यह पत्र प्रतिदिन मंदिर की कथा में अचूक श्रवण करावें।

प्रेम की पराकाष्ठा

- चन्द्रकांत मोहनलाल पाठक (गांधीनगर)

जो मनुष्य मुमुक्षु था सात्विक प्रवृति का था, सीधा सादा-सरल था, श्रद्धालु, आस्तिक तथा दयावान था। उसके पास थोडी जमीन थी। उसमें ही संतोष करता। उसको कभी कभी विचार आता था कि मेरा कल्याण कैसे होगा ? उसके मन में हुआ कि भगवान शंकर भोलानाथ हैं, देवों के देव महादेव हैं। महेश्वर हैं वे जल्दी प्रसन्न होजायेंगे। इसलिये उनकी सेवा-पूजा करुं तो अच्छा रहेगा। यहाँ से थोड़ीदूर पर समुद्र के किनारे गोपनाथ के पास नकलंक महादेव बिराजते हैं वहाँ जाकर उन्हीं की आराधना करुं। ऐसा विचार करके यह अपनी पत्नी को बताया और वहाँ से निकल पड़ा।

वह भक्त था पूंजाजी। जाति से क्षत्रिय था। पाणवी गाँव में रहता था। नकलंक महादेव के मंदिर में पहुंच गया। शिवलिंग को बाहों में भरकर शिवस्मरण करने लगा। ॐ नमः शिवाय के मंत्र का जप प्रारंभ कर दिया। इतने में एक दिन समुद्र में भरती आई, महादेव को जलाभिषेक करती गयी और पुंजाजी को साथ में खींच लेगयी। बीच में लहर पुंजाजी को छोड़ दी, पुंजाजी वहीं पर खड़ा हो गया। उसके कपड़े भीग गये थे। भीगे कपड़े में ही पुंजाजी भगवान के मंदिर में जाकर पुनः लिपट गया और जोर-जोर मंत्र जपने लगा। इतने में उसे आकाश में से आवाज सुनाई दी। तूं अपने घर वापस जा, स्वामिनारायण भगवान प्रगट हुए हैं। वह घर आकर शांती का काम प्रारंभ कर दिया। आकाश बाणी में स्वामिनारायण का नाम अवश्य सुना वे भगवान हैं ऐसा भाव उसके मन में नहीं आया। एक दिन पुंजाजी गाँव के बाहर आकर बैंलों को पानी पिला रहा था। इतने में भगवा वस्त्र वाले साधुओं को देखा, उससे पूछा क्या, आप लोग स्वामिनारायण के साधु है ? उन्होंने कहा हाँ भगत, हम स्वामिनारायण के साधु है। जय स्वामिनारायण !

पुंजाजीने कहा आप मेरे घर पधारिये। भोजन भी वहाँ रखियेंगा। हमें आप से कुंछ पूछना है। भक्त का भाव देखकर साधु उसके घर गये। ठाकुरजी का भोग लगाये। भोजन करके बैठे। उसी समय पुंजाजी ने पूछा कि स्वामिनारायण भगवान है क्या ? संतोने कहा हाँ भगत, यह सत्यवात है। स्वामिनारायण भगवान है। यही हमारे इष्टदेव है। व्यास मुनिने १२ हजार श्लोकों वाला ब्रह्मांड पुराण लिखा हैं, उसमें वे एक श्लोक ऐसा लिखे हैं कि जिस में कलियुग में धर्मदेव नामक ब्राह्मण के घर पुत्र के रुप में भगवान का अवतार होगा। वही अवतार स्वामिनारायण भगवान का अवतार है।

पुंजाजीने पूछा कि आपके सत्संग में आने के लिये क्या करना होगा ?

साधुने कहा, भगत ! अपना संप्रदाय उद्धव संप्रदाय कहलाता है। जिसे स्वामिनारायण संप्रदाय के रुप में जाना जाता है। हम आपको पंच वर्तमान धारण करायेंगे, आप भी हमारी तरह तिलक-चंदन कंठी को धारण करें। प्रतिदिन ठाकुरजी की पूजा करना होगा। भगवान का भोग लगाकर बाद में प्रसाद ग्रहण करना। हमारे पांच वर्तमान का पालन आप को भी करना होगा। दारु इत्यादि मांदक द्रव्य का सेवन नहीं करना होना। मांस भक्षण नहीं करना, चोरी नहीं करना, व्यभिचार नहीं करना, अपने अपने वर्ण के धर्मानुसार आचरण करना। इतना करने से आप सत्संगी हो जायेंगे। नजदीक में कारियाणी गाँव है, वहाँ पर भगवान वस्ता खाचर के घर कभी-कभी आते रहते हैं। वहाँ जाकर कह दीजिये कि प्रभु जब आवें तब वे आपको सूचित करदें।

एक दिन झमराणा के जीवा दवे कारियाणी के दरबार में भिक्षावृत्ति के लिये आये। श्रीहरि उस समय

कारियाणी में ही थे । वस्ताखाचर ने जीवा दवे को कहा कि आपको तसला भरकर आंटा देते हैं, आप इसी समय पाणवी जाइये, वहाँ पुंजाजी से कहिये कि महाराज कारियाणी पधारे हुए हैं।

पुंजाजी खेत में थे खेत का कार्य छोड़कर कारियाणी पहुंच गये । दरबार में जाकर भगवान कहाँ रुके है यह पूछने लगे, उन्हें वहाँ पता चला कि महाराज अभी यहाँ से सारंगपुर प्रस्थान कर गये हैं । भूखे प्यासे पुंजाजी सारंगपुर की राह पकड़ लिये । भगवान से मिलने के लिये इतना आतुर है कि वे सुधबुधभूल गये । मन में उमंग है, उत्साह है, आनंद है, वे आतुर है प्रभु से मिलने के लिये । उनके मन में एक ही इच्छा है श्रीहरि दर्शन की ।

सारंगपुर जाते समय रास्ते में सजेली बजेली नाम का गाँव आता है । उस गाँव के नजदीक में एक समी वृक्ष के नीचे महाराज कुछ समय आराम करने की इच्छा किये । नाजा जोगिया आसन बिछा दिये, प्रभु उस पर बैठ गये, ऐसा कहने लगे कि पता नहीं क्यों आज प्यास बुझ नहीं रही है । पानी लाइये पीना है । दो घूट पीते बाद में वापस कर देते । बाद में स्वयं खड़े हुए । वृक्ष के ऊपर चढकर कारियाणी की तरफ देखने लगे । उनके भक्त भूखा प्यासा उनके दर्शन के लिये व्याकुल उधर ही आ रहा था । अतिशय प्यास लगी है, गला सूख रहा है । आगे-चलना कठिन हो रहा है फिर भी हिम्मत से आगे बढ रहा है ।

श्रीहरि नीचे उतरे, नाजा को कहे कि पानी का थर्मस ले आइये मेरा भक्त भूखे प्यासे मेरे दर्शन के लिये आ रहा है । उसे पानी पिलाने जाना है । महाराज किसी को कहे नहीं कि आप जाइये । संत को भी नहीं कहे कि आप पानी पिलाने जाइये । स्वयं पानी का थर्मस लेकर चल दिये । पुंजाजी को पानी पिलाये और बांह में लेकर भेंटने लगे । पुंजाजी के आनंद की सीमा न रही । शरीर की थकान चली नई । मन में शीतलता व्याप्त हो गयी । हृदय में शांति का अनुभव होने लगा । हरिदर्शन की आकांक्षा भी शांत हो गयी । भक्त के साथ प्रभु उसी वृक्ष के नीचे आये और नाजा को कहने लगे, नाजा ! अब हमारी व्याख अपने आप शान्त हो गयी ।

ऐसा प्रसंग होने के बाद भगुजी घास लेने के लिये ऊँट गाड़ी से भाल देश जा रहे थे । ऊँट को प्यास लगी वहीं पर उसे पानी पिलाने लगे । वहीं पर भगुजी को देखे, परस्पर जयश्री स्वामिनारायण कहे । पुंजाजी-भगुजी का मुख देखे तो पूछे कि आप क्यों उदास दिखाई दे रहे हो?

पुंजाभाई ! महाराज धाम में पधार गये । उनकी उत्तर क्रिया में हजारो लोग घोड़े बैल के साधनो से आयेंगे, इसलिये उन सभी को घास चारा हेतु भाल देश जा रहा हूँ । पुंजाजी ऐसा समाचार सुनकर काटो तो वदन में खून नहीं, जैसी स्थिति को प्राप्त हो गये । अवाक् सी स्थिति में हो गये । दिड मूढ रह गये । श्रीहरि की प्रेरणा से थोड़ा चैतन्य हुये, बाद में श्रीहरि की उत्तर क्रिया में भाग लेने गढडा पहुँच गये । अपने संतुलन को बनाकर सम्पूर्ण क्रिया पूर्ण किये । संत-हरिभक्तों की सेवा करते रहे । जब सभी आगन्तुक स्वस्थान प्रस्थान कर गये, उन्हें एकाकी पन महसूस होने लगा, तब बालक की तरह रोने लगे । अब महाराज का स्मरण करके कहने लगे कि हे महाराज ! आपका वियोग हमसे सहन नहीं हो रहा है, आप अपने धाम में हमें ले चलिये । उनके आर्तनाद को सुनकर श्रीहरि विमान लेकर आये और अपने धाममें ले गये ।

कोई कटारी कर मरे कोई मरे विष खाय ।
प्रीति ऐसी कीजिये हाय करे जीव जाय ॥

प्रिय व्यक्ति का वियोग सहन नहीं होता इसलिये यहाँ भी ऐसी स्थिति है यहाँ तो भक्त और भगवान की बात है ठीक यही स्थिति आत्मीय व्यक्ति के लिये होती है लेकिन भगवान के प्रति यह मनोदशा सराहनीय है । ऐसे प्रेमी भक्त धन्य होते है ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर सापावाडा का
नूतन फोन नं. (०२७७०) २९१५७७

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम द्वारा

भाद्र शुक्ल गणेश चतुर्थी का उत्सव मनाया जायेगा

श्रीजी महाराज ने शिक्षापत्री में आज्ञा है कि गणेश चतुर्थी हनुमान जयंती एवं शिवपूजन को उत्साहपूर्वक करना, उसी आज्ञा को ध्यान में रखकर प.पू. बड़े महाराजश्रीने भी संकल्प किया है कि अब से श्री स्वामिनारायण म्युजियम में गणेश चतुर्थी, हनुमान जयंती तथा शीव पूजन का उत्सव प्रतिवर्ष मनाया जायेगा । जिस में आगामी गणेश चतुर्थी ता. ९-९-१३ सोमवार दोपहर ३-०० बजे से पूजन प्रारंभ होगा तथा सायंकाल ६-३० बजे प.पू. लालजी महाराजश्री के हाथों पूर्णाहुति होगी ।

इसलिये जिन्हे गणपति पूजन का लाभ लेना हो वे म्युजियम में फोन से अथवा प्रत्यक्ष संपर्क कर सकते हैं।

उपरोक्त श्री गणपतिजी की मूर्ति की विशेषता जिस तरह होल नं. ८ में सर्वावतारी श्रीहरि द्वारा पूजित श्री नरनारायणदेव विराजमान है, जिसके अभिषेक का अगणित हरिभक्त लाभ लेते हैं । उसी तरह अपने म्युजियममें स्वयं सर्वावतारी श्रीहरि द्वारा पूजित हनुमानजी तथा गणपतिजी की काले पत्थर की मूर्ति के रुप में विराजमान हैं। जिसके पूजन-अभिषेक का लाभ सभी हरिभक्त ले शके इस हेतु से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से गणेश चतुर्थी के दिन गणपतिजी का अभिषेक, श्रावण मास में शिवलिंग का अभिषेक तथा हनुमान जयंती को श्रीहरि द्वारा पूजित हनुमानजीका शास्त्रोक्त विधिसे अभिषेक किया जायेगा ।

गणपति पूजन के लिये यजमान पद प्राप्ति हेतु ११०००/- रुपये भरकर लाभ ले शकते है।

स्थान मर्यादित होने से जो पहले वह पहले अपना नामांकित करवायें ।

मो. : ९९२५०४२६८, लेन्ड लाईन : ०७९-२७४९४५९७

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि जून-२०१३

रु. १,०१,०००/- डाह्याभाई नारणदास पटेल, माणसावाला, प.पू. बड़े महाराजश्री के प्रागट्यदिन निमित्त।

रु.६०,१११/- नटवरभाई लालजीभाई वन्डरा, नारणपुरा

रु.५१,०००/- श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया।

रु.११,०००/- धीरजभाई के. पटेल, धरमपुरवाला

रु.७,५०१/- अ.नि. प.भ. अनंतराय मणीलाल धोलकिया, मुंबई

रु.७,३४५/- सां.यो. नानबाई गुरु धनबाई (प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी की चरण भेंट), मानकुवा (कच्छ)

रु.६,०००/- भाईलालभाई पोपटलाल पटेल, जोषीपुरा

रु.५,५५५/- भूडिया कांतिभाई केशरा फोटडी (कच्छ)

रु.५,१००/- अ.नि. हरिभाई जेसंगभाई पटेल, रणछोडपुरा

रु.५,००१/- अ.नि. तारागौरी जयंतीलाल, अहमदाबाद

रु.५,००१/- चि. जशना जन्म के निमित, ह. जितेन्द्रभाई, अहमदाबाद

रु.५,०००/- सुरेशभाई विठ्ठलभाई, वावोल

रु.५,०००/- परसोत्तमदास खीमजीभाई पटेल, करजण

रु.५,०००/- मीनाबहन के. जोषी, बोपल

रु.५,०००/- प्रकाश सेल्स एजन्सी, अहमदाबाद

रु.५,०००/- अरविंदाबहन हसमुखभाई सोनी

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (जून-२०१३)

ता.५-६-१३ प्रात: प.भ.अ.नि. प्रभुदासभाई ह. केनोपी भूपेन्द्रभाई पटेल, मेमनगर
सायंकाल : इश्वरभाई प्रभुदास पटेल कुंडाल (विवाह के ५० वर्ष के उपलक्ष्य में)

ता.६-६-१३ प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी की प्रेरणा से सां.यो. नानबाई गुरु सां.यो. धनबाई मानकुवा (कच्छ)

ता.८-६-१३ जगदीशभाई केशवलाल पटेल, ह. भरतभाई राणीप

ता.९-६-१३ श्री स्वामिनारायण सत्संग समाज समूह महापूजा, ह. नरेशभाई पटेल अहमदाबाद

ता.९-६-१३ विनोदभाई लालजीभाई (कच्छ) ह. प्रवेशभाई सोनी, अहमदाबाद

ता.१६-६-१३ अ.नि. अमृतभाई नरसीभाई पटेल, ह. जतिन, रितेष, मणीनगर

ता.२३-६-१३ पटेल जयंतीभाई नारणभाई प्रभुदास, उनावा

ता.३०-६-१३ नटवरलाल लालजीभाई वंडरा, अमदाबाद

केवल वोडाफोनवालों के लिये

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें।

मोबाईल में टाईप करें : **cf 270930** टाईप करें **56789**

नम्बर पर : **S.M.S.** करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा। नोंट : **cf** टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग शिक्षापत्रिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी
(गांधीनगर)

पक्का भक्त किसे कहा जाये ?

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

आम कच्चा भी होता है और पक्का भी
केला कच्चा भी होता है और पक्का भी
अमरुद कच्चा भी होता है और पक्का भी
रोटी कच्ची भी होती है और पकी भी
खीचडी कच्ची भी होती है और पकी भी
घड़ा कच्चा भी होता है और पका भी

इन बातो से समझ जाते है कच्चा क्या है और पका क्या है। किंतु स्वामिनारायण भगवान कहते हैं कि भक्त कच्चे भी होते है और पक्के भी। तब प्रभु को ही पूछते है पक्के भक्त कौन है ? उत्तरमें स्वामिनारायण भगवान कहते है कि - नियम, निश्चय और पक्ष जो इन तीनो का पालन करे वही पक्का भक्त है। और जिस में ये तीनों को पालन करने का सामर्थ न हो वह कच्चा भक्त है। अब तो समझ गये ना दो प्रकार के भक्त है। सबसे पहले नियम की बात करते है, मुख्य ग्यरह नियम है। यदि कोई पूछे कि आप किसकी भक्ति करते है ? तो आप कहेंगे स्वामिनारायण भगवान की और संप्रदाय का नियम पूछे तो क्या जवाब देंगे ? मंदिर चलिए स्वामीजी बतायेंगे ? यदि हमें अपने संप्रदाय में धर्म के ग्यारह नियम नही पता तो पालन क्या करे ?

ये नियम सभी को याद रहे इस लिए दैनिक प्रार्थना में रखे है। स्वामिनारायण भगवानने प्रेमानंद स्वामी को आज्ञा की अपने ग्यारह नियम भक्त रोज बोले ऐसा कुछ करे। स्वामीने ऐसा पद बनाया जिस में सारे नियम आ जाये। रोज संध्याकाल में हम ठाकुरजी को साष्टांग नमस्कार करते है तब ये पद बोलते है।

''निर्विकल्प उत्तम अति, निश्चय तब घनश्याम''

यह प्रार्थना पद है। इसमें स्वामीने सात वस्तु मांगी है। ये सात चीजे मांगी है इसके पश्चात ग्यारह नियम आते है। चलिये हम ग्यारह नियम की बात करते है।

''सहजानंद महाराज के सभी सत्संगी सुजाण, ताकुं होय दृढ वर्तनो, शिक्षापत्री प्रमाण।'' स्वामिनारायण भगवान के भक्तों को शिक्षापत्री के मुताबिक वर्तन करना चाहिए। शिक्षापत्री में भक्त के सुख के लिए अनेक नियम व आज्ञा है, हम ग्यारह नियम की बात करेंगे।

''सो पत्री में अति बडे, नियम एकादश जोय,
ताकि विकित कहत हुं, सुनियो सब चित्त प्रोय।''

चलिए ग्यारह नियम याद करते है, पहला नियम है,

''हिसा न करनी जंतु की''

जीव प्राणी मात्र की हिंसा नही करनी चाहिए। अहिंसा ही सबसे बड़ा तप है, सर्वोत्तम धर्म है। सबसे बडा सदाचार क्या है ? अहिंसा ही सबसे बड़ा सदाचार है। अहिंसा की शुरुआत सूक्ष्म हिंसा मे करते है। जीवन चर्या में ध्यान न रखे तो पीने के पानी में हिंसा, ध्यान न रखे तो भोजन बनाने में, खाने में इत्यादि में हिंसा होती है। और शिक्षापत्री में खूब स्पष्ट रुप से नियम बतायें हैं। यहाँ हमने पहला नियम देखा और उसके बारे में जाना अब दूसरा नियम देखते है।

''परत्रिय संग को त्याग''

गृहस्थाश्रमीने ब्राह्मण और अग्निको साक्षी मान

कर विवाह किया वह पति-पत्नी है। यही उसकी दृष्टि कहीं जाती है। जो पुरुष दांपत्य शुद्धि रखता है। उस गृहस्थ का जीवन तपस्वी जैसा पवित्र है। ऐसे गृहस्थ के संतान सात्विक व सद्‌बुद्धि वाले होते है। आज हमने दो नियम देखे है।(विशेष अगली बार)

●

भगवान के चरित्र कल्याणकारी है

(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

जगत का नाथ, अनंत ऐश्वर्य का नाथ, सभी सुरत, सभी भक्ति और अनाथो का नाथ आज वृषभो को सनाथ करने को तैयार हो रहा है। बात बहुत सुंदर है। किंतु किसान भक्तो को जल्द समझ में आये ऐसी है, बाकी वृषभ क्या और नाथ क्या उसे समझना पड़े। चिंता न करे गुड़ के बारे में जानो या न जानो गुड़ तो मीठा ही होता है उसी प्रकार ये स्वामिनारायण भगवान का चरित्र है कल्याणकारी ही होगा।

जीव का कल्याण तब भी हो जाता है जब वह अपने साधक भगवान की लीला चरित्र को याद रखता है और उसी के माध्यम से भगवान को याद करता है।

चलिए भगवान की एक सुंदर लीला देखते है। चलिए भगवान का एक चरित्र देखकर खुद को कृतार्थ करते है।

स्वामिनारायण भगवान एक बार गढडा में बिराजमान थे। दादा खाचर के प्रेम के वश हो कर घर के काम भी महाराज करते थे।

दादा खाचर के वहाँ छत्तीस बछड़े थे। बछड़ो की गिनती है तो सोचे गाय और बछिया कितनी होंगी। और कितनी सारी होगी। ये बछड़ो को चरने के लिए छोड़ा गया था। जिसे चरना हो तो चरे बाकी घूमे। और ये बछडे इतने बिगड गये की किसी को हाथ न लगाने दे। बांधने जाये तो मारते नथ लगाते थे कैसे, मरकहे हो गये थे। सब थक कर महाराज के पास गये पूछे इसका क्या उपाय तब महाराज बोले चलो हम चलते है। फिर महाराज वहाँ पधारे जहाँ बछड़े रखे थे। और थोडी देर में सबको पकड कर नथ लगा दी तब ब्रह्मानंद स्वामी आये और महाराज बोले ''देखो स्वामी हमने छत्तसी बछडे को नथ बांधी।'' स्वामी हंसकर बोले, ये तो आपका पुराना अनुभव है कृष्णावतार में आपने सात सांढ को नथ पहनाई थी। आपको तो अनुभव है बहुत बड़ा काम किया आपने।

भक्तहो भगवान तो सर्व शक्तिमान है, वे कुछ भी कर सकते है। वह चाहे तो बिल्ली को शेर बना सकते है और शेर को बिल्ली भी। ऐसे परमात्मा में आस्था रख उनकी दिल से भक्ति करनी चाहिए।

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.info

www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५ ● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

shreeswaminarayan9@gmail.com

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से "सावधानी रख कर तप करना है कि हमे किस दिशा मे जाना है ?"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

चार साधु थे । चारो साधु अलग-अलग जगह बैठ गये थे । एक साधु रास्ते पर बैठ गया । दूसरा टावर पर बैठा तीसरा कचहरी में और चौथा स्मशान में बैठ गया । तब साधु के पास से जो भी जाता वह पूछता की आप यहाँ क्यों बैठे हो ? रास्ते वाले साधुने कहा यहाँ से की लोग जाते है कोई रुकने को तैयार नहीं है । उनको तो पता भी नही है कि उन्हें कौन सी दिशा में जाना है । उन सभी को सावधान करने बैठा हूँ । हमें ही सोचना है कि हमे कौन सी दिशा में जाना है क्या हमे पता है ? इस जगत में आकर मनुष्य भूल जाते है कि वे संसार में क्युं आये है ? हम किसके है ? और हमे कहाँ जाना है ? सुख की खोज में मनुष्य सभी जगह भटकता है । टावर वाला साधु कहता है जैसे जैसे घड़ी की सूई धूमती है मुझे पता चलता है की मेरा आयुष्य कम हो गया । जब घंटनाद होता है तब पता चलता है मेरे जीवन में से एक घंटा कम हो गया । तीसरा साधु कहता है कि कचहरी में बैठे देखताहूँ की रोज दो-तीन अपराधी आते है और कर्म की सजा पाते है अर्थात् दंडित होते है । मनुष्य अपराधअपनी मरजी से करता है किंतु अपराधका फल भोगने में उसकी मर्जी नही चलती । यह देख मै सावधान रहताहूँ की मुझ से गलत कर्म न हो । चौथा साधु स्मशान में बैठा है वह बताता है कि श्मसान में रोज एक-दो व्यक्ति का मृत्यु देखता हूँ । तो हंमेशा मृत्यु का खयाल रहता है और प्रभु का स्मरण विशेष होता है । और गलत कर्म नहीं होते है, इसलिए हंमेशा मृत्यु को याद रखना है । और हंमेशा तैयार रहना है क्योकि मृत्यु कभी भी आ सकती है और अंत समय में प्रभु को प्राप्त करना है । परमात्मा को प्राप्त करने के दो रास्ते है, (१) कामना की पूर्ति (२) कामना का त्याग ।

कामना की आपूर्ति ज्यादा मुश्किल है । कामना का त्याग कर परमात्मा को प्राप्त करना सरल है । ऐसे बहुत कम है जिनकी सभी मनोकामना पूर्ण हो गई है । क्युंकि सभी कामना की पूर्ति कभी नहीं होती । बच्चा जब छोटा होता है तब खिलौनो से खेलता है और बड़ा होता है तब अभ्यास, कमाई, भोग-विलास और दूसरी कामना पूर्ति की तरफ बढता है । इलिए कभी कामना की पूर्ति होती ही नहीं है । कामना की पूर्ति के पश्चात एक रही कामना आती है । जब हम कामना का त्याग कर देते है तब हमारा एक ही लक्ष्य रहता है । परमात्मा की प्राप्ति का मार्ग सरल है, किंतु शुध्धअंतकरण की आवश्यकता है और भक्ति की भूख भी होनी चाहिए क्युंकि भक्ति की भूख न हो तब भक्ति या सत्संग कुछ भी नहीं पचता है, जिस प्रकार निरोगी मनुष्य को भूख लगती है और रोगी को कितना भी खीलायें पचता नही है । इसलिए शुद्ध अंतःकरण वाले को ही भक्ति की भूख होती है । इसलिए अंतःकरण को शुद्ध रखना है और कहाँ जाना है उसका ख्याल रखना है । जिस प्रकार धोडे को काबु में रखने के लिए बांधकर रखते है और उसका मालिक जहाँ लेकर जाना होता है लगाम खीच कर लेजाता है । उसी प्रकार हम इन्द्रियों के मालिक है और उन्हें हमें काबु में रखना है । हम कहते है दूसरे के मंदिर नही जाते, तो वे लोग कहते है दर्शन करने में क्या है वहाँ भी तो भगवान है । जिस प्रकार पानी पीनेवाला होता है, कुछ पानी स्नान योग्य तो कुछ केवल हाथ पाँव

ही धोने लायक और कुछ पानी को हम छू भी नही सकते है। हमे बस महाराजकी आज्ञा का पालन करना है। एक किसान थे आपने खेत में पानी के लिए आठ दश जगह पानी के लिए गड्ढा किया पानी नही मिला तभी एक संत आये और कहा एक ही जगह गहेरा गड्ढा करो। इस प्रकार उस किसान को पानी मिला किन्तु आगे की महेनत व्यर्थ गई। हम कहीं भी जाते है हमे ज्ञान तो मिलता है। किन्तु लक्ष्य तक पहुंचाने वाला ज्ञान नहीं मिलता। हमे श्री नरनारायणदेव की शरण हंमेशा रखनी है। क्युंकि शरणागति के विना कल्याण नहीं है। और भक्ति ऐसी करनी है कि भगवान भी प्रेम करे। तो नरनारायणदेव आपकी भक्ति की शक्ति बढायें एसी प्रार्थना।

•

सत्संग का महिमा

- सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

स्वामिनारायण भगवानने सत्संग पर ज्यादा भार दिया है। सत्संग से ही भक्ति की वृद्धि होती है। इससे संप्रदायका संगठन सही रहता है। इस कलियुग में संसार को पार करने वाले स्वामिनारायण भगवान है और धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री की आज्ञा में रहने वाले भी भवसागर पार करते है। उसी प्रकार स्वयं को प्रभु को समर्पण कर चुकी और प.पू.अ.सौ. गादीवालाकी आज्ञा में रहती सांख्ययोगी बाई भी ये भवसागर की नावरुप है। यही सब इस लोक में प्रगट भगवान को बताते है और अक्षरधाम का रास्ता भी बताते है। जब भगवान यही प्रत्यक्ष स्वरुपे दुनिया में न हो तब संतो की कृपा से और मार्गदर्शन से अपना ध्येय सिद्ध कर सकते है। संत करुणा के सागर होते है। श्रीजी महाराज कहते है ३० लक्षण युक्त संत साक्षात् मेरी मूर्ति है। ऐसे संतो में मै खुद रहता हूं। ''मम उर संतन उपर वास कंठ स्थिर होई'' एसे संतो में भगवान साक्षात् रहते है। निष्कुलानंद स्वामीने भक्तचिंतामणी में निखा है साक्षात् भगवान और संत कल्पवृक्ष के समान है। जिस प्रकार कल्पवृक्ष के नीचे बैठ जो संकल्प करता है वह कार्च हो जाता है। जब कई जन्मो का पुण्यो उदय होता है तब भगवान और सत्संग प्राप्त होता है। सत्संग पूरे मन से किया जाये तो बहुत लाभकारी है। यही सत्संग पूरे मन से करे तो मोक्ष प्राप्त होता है। अपने तन, मन और धन का अभिमान छोडकर निर्मानी होकर श्रध्दा से सत्संग करना चाहिए। जैसा संत मार्गदर्शन करे ऐसे चलना चाहिए।

हर मुमुक्षु को तीर्थयात्रा की स्वाभाविक रुचि रहती है। ऐसे यात्रि सभी ६८ तीर्थ दर्शन करे तब भी जीव में बल नहीं आता। तीर्थ में जाकर सच्चा सत्संग न करे तो उसके वर्तन में परिवर्तन कैसे आये ? सत्संग से वर्तन और स्वभाव में परिवर्तन आता है।

बोटाद के भगा दोशी थे। वे महाराज को भोजन कराने गये थे। महाराज कहे मेरे मुताबिक करना है या भोजन कराना है। भगा दोशी बोले भोजन कराना है। तब श्रीजी महाराज बोले आप इतना समय मेरे साथ रहे मेरे हृदय को समझे नहीं। अर्थात् मुझे जाना ही नहीं। हरि के मुताबिक रहे तभी अपनी भक्ति को दृढ मानना। भक्ति दृढ धर्मकुल आश्रित संत समागम और सत्संग से और मार्गदर्शन से होती है। सत्संग से अंत:शत्रु का नाश होता है। और ज्ञान, वैराग्य, भक्ति-धर्म, विवेक आदि सद्गुण का उदय होता है।

ब्रह्मानंद स्वामीने भी कहा है। ''संत समागम कीजे हो निश दिन संत समागम कीजे मान तजी संतन के मुख से प्रेम सुधारस पीजे.... हो निशदिन संत समागम कीजे।''

जिस प्रकार सर्प बाहर टेढा चलता है पर उसके बिल में वह सीधा ही चलता है। संत मार्गदर्शन से जीव आत्मनिष्ठ होता है और समझ प्राप्त होती है जो अंतत: अक्षरधाम का मार्ग बताती है।

दूसरी साधना से अक्षरधाम नहीं मिलता सत्संग से ही प्राप्त होता है। इसलिए कहा है ''श्रीजी अने सहु संतो रे मणी करजो मारी सहाय''

•

रोटी के बदले मोक्ष

– सोनी रंजनबहन कांतिलाल (मेमनगर)

एक बार ब्रह्मानंद स्वामी सत्संग कर लौट रहे थे । रास्ते में दो खेत के बीच से गुजर रहे थे तब वहाँ एक बालक खेत की रक्षा कर रहा था । श्रध्धालु और संतप्रेमी साधु को देख आकर्षित होते है । उसके आवाज लगाई स्वामीजी ! मिष्ठान खायेंगे ?

बालक की भावना से स्वामीजी प्रसन्न हुए और बोले हाँ खायेंगे । दो दिन से संतो का उपवास था । संतगण खेत में गये । बालकने पूछा स्वामीजी । रोटी खायेंगे ? स्वामीजीने कहा तब तुम क्या खाओंगे ? उसने कहा मेरा घर कहाँ दूर है अभी चला और पहुंच गया'', स्वामीने हा कहा तब पेड से भोजन उतारकर स्वामीजी को दिया । ब्रह्मानंद स्वामी बालक पर खूब प्रसन्न हुए और बोले बेटा ! मैं तुमसे प्रसन्न हुँ जो मांगना है मांग लो । बालक बोला स्वामीजी हमे किसी भी बातकी कमी नहीं है । आपको जो योग्य लगे देदीजीये । स्वामीजीने कहा मेरा पेट याद रखना, स्वामी का पेट बड़ा था याद रखना, तेरा कल्याण होगा ।

बालक बडा हुआ । रोटी वाली बात उसे कई बार याद आती । जब उसका अंत समय आया तब उसे याद आ गया कि बड़े पेट वाले साधु को रोटी दी थी । ब्रह्मानंद स्वामी और श्रीजी महाराजन उसे अक्षरधाम ले गये ।

दृष्टा स्पृष्टा नता वा कृतपरिचरणा भीजिता पूजिता वा ।

एसे संतो को देखे स्पर्श करे, भोजन कराये और केवल याद भी करे तो कल्याण होता है ।

•

कसौटी कंचन की

– परमार भूमिका भगवानजीभाई (सुरत)

भगवान विशाल सभा में बैठे ते । भगवानने मुक्तानंद स्वामी को आज्ञा की आप पांच साधु लेकर सत्संग के लिए जायें । उस समय अपने संप्रदाय का खूब विरोधथा । ढोंगी साधु संतो को खूब परेशान करते थे । राशन पानी भी नहीं देने देते । मुक्तानंद स्वामी ने कहा पांच संतो को लेकर जाना मुश्किल है । यहाँ एक के राशन की मुश्किल है वहाँ पांच की बात कहाँ बनेगी, महाराजने कहा तब दश को ले जाइये इस प्रकार गीनती साठ तक पहुंची तब मुक्तानंदजी चुप हो गये । यह सब सुन गोपालानंद स्वामी बोले महाराजकी आज्ञा मानकर ८० साधु के साथ सत्संग व धर्म प्रचार करो । आखिर मुक्तानंदजी संतो को लेकर नीकले । कई बार एक दिन का उपाय होता कई बार तीन दिन का उसे संतगण करियाणी पहुंचे । कुछ ढोंगी संतोने इन संतगण को पीटा । सब खून से लथपथ थे । महाराज वहीं बिराजमान थे । महाराज की आज्ञा लेकर मंडल दर्शन करने आया और महाराजने संतो को गले लगाया तब महाराज के हात खून से रंग गये । महाराज बोल उठे ''ऐसा अधम कृत्य किसने किया है ? मेरे गाय जैसे संतो को किने दु:ख दिया है ? मेरे संतो को परेशान करने वालो को श्राप देता हुं कि इसी क्षण ब्रह्मांड का प्र.....? तभी मुक्तानंद स्वामी महाराज के चरणों में गीरे और कसम देकर प्रलय बोलने से रोक दिया । महाराज की आँखो से आँसु आ गये और बोल उठे ''यदि कोई मेरे भक्त और संत को दु:खी करेगा तो मै बर्दास्त नहीं करुंगा, आज मुक्तानंद स्वामीने रोका नहीं तो पलभर में ब्रह्मांड का नाश कर देते ।

भक्तह्वो महाराजने वचनामृत में कहा है कि मुझे मेरे संत और भक्त बहुत प्यारे है इतना जो मुजे अक्षरधाम भी प्यारा नहीं है । इसलिए भगवान तथा उनके स्थान पर बिराजमान धर्मकुल तथा संत-हरिभक्त हमसे किसी भी प्रकार से परेशान न हो इस प्रकार सत्संग कर महाराज को प्रसन्न करना मनुष्य के जन्म की सार्थकता है ।

सत्संग समाचार प्रेषित करने वालो को सूचना

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रकाशन के लिये संत-हरिभक्त सत्संग समाचार भेजते है, उन्हे विशेष सूचना है कि समाचार अत्यंन्त लधुकाय का हो, क्रमिक हो तथा प्रसंगोचित हो ऐसे लेख भेंजने की सभी को सूचना दी जाती है । सत्संग समाचार प्रतिमास की २० ता. तक आना आवश्यक है । वही समाचार सत्संग मासिक में प्रकाशित किया जायेगा । इसकी सभी लोग जानकारी कर लें ।

सत्संग समाचार

अहमदावाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव का केशर स्नान से अभिषेक

सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायणने संप्रदाय में प्रथम अहमदाबाद में मंदिर का निर्माण करवाकर श्री नरनारायणदेव को स्थापित किया गया । ऐसे प्रतापी महा अलौकिक सभी के मनोरथ संकल्प को सिद्ध करने हेतु ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-१५ ता. २२-६-१३ शनिवार को प्रातः ६-३० से ६-४५ तक षोडशोपचार केशर स्नान श्री नरनारायणदेव के पुजारी ब्र. स्वामी राजेश्वरानंदजी, ब्र. स्वा. अनंतानंदजी, ब्र. स्वा. मुकुन्दानंदजी तथा पा. श्री घनश्याम भगत आदि संतो द्वारा विधिवत करवाया गया । इस प्रसंग के यजमान अ.नि.प.भ. राजाभाई कनुभाई झवेरी परिवार (जामनगरवाले) ह. रसिकभाई, घनश्यामभाई, नविनभाई, विजयभाई, जीतेन्द्रकुमार तथा जयप्रकाश आदि परिवारने ठाकुरजी का पूजन-अर्चन करके महालाभ लिया था । अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु.शा.स्वा. हरिकृष्णदासजीने यजमान परिवार का सन्मान किया । केशर स्नान दर्शन का हजारो भक्तजनोने लाभ लिया । (ब्र. स्वा. मुकुंदानंद)

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में उत्तराखंड में मृत आत्माओं की शांति के लिए महामंत्र धून की गयी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी के मार्गदर्शन से अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में ता. २३-६-१३ को उत्तराखंड में तीर्थ स्थान केदारनाथ, गौरीकुंड, चमौली, गोविंदघाट आदि स्थानो में कुदरत के महाप्रकोप बादल फटने से तथा भूस्खंलन से अनेक यात्रिकगण के मृत्यु हुई है । हजारो यात्रिक पर्वत में खाई में फंसे है । सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान मृतात्माओं को शांति प्रदान करे तथा फंसे हुए लोगो को सुरक्षित घर पहुंच जाय इसीलिए अखंड स्वामिनारायण महामंत्र धून संतो हरिभक्तो द्वारा की गयी । प.पू.ध.धु. आचार्य

श्री नरनारायणदेव देश के सभी हरिभक्तों को दशांश विशांस दान के विषय में

समस्त श्री नरनारायणदेव देश के हरिभक्तों से नम्र निवेदन है कि, सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान ने जो शिक्षापत्री लिखी है उसमें १४७ वें श्लोक में आज्ञा की है कि -

''निज वृत्युद्यम प्राप्त धन धान्यादिकश्च तैः ।
अर्प्यो दशांशः कृष्णाय विशोंऽशस्त्विहदुर्बलैः ॥

गृहस्थामी का धर्म है कि अपने पुरुषार्थ से जो भी धनार्जन करता है उसमें से भगवान श्रीकृष्ण को दशवां भाग या विशवां भाग अपने सामर्थ्य के अनुसार अवश्य अर्पण करें । यह आज्ञा श्रीहरि की है - अतः इसका पालन सभी को अवश्य करना चाहिये ।

देव को दिया जाने वाला १९ या वीस भाग में दान अन्त्र देना देव द्रोह है । श्री नरनारायणदेव देश के हरिभक्त श्री नरनारायणदेव के मंदिर में रुपये, अनाज, या अन्य जो पदार्थ दान देना चाहते हैं, उसे मंदिर की आफिस में देकर पक्की रसीद अवश्य प्राप्त करलें । किसी प्राईवेट संस्था या मुख्य मंदिर से संललग्न मंदिर या संस्था न हो तो वहाँ देव अंश का दान न करें, इसका ध्यान रखें । अपना कल्याण करने वाला, मोक्षदाता भगवान नरनरायणदेव है । इन्हीं को दान करने की श्रीहरि ने आज्ञा की है । उस आज्ञा का पालन होना चाहिये, आज्ञा का लोप सर्व विधहानि करने वाला होता है । जो दशवां या विशवां भाग श्री नरनारायणदेव को देंगे उनका सर्व विधकल्याण होगा । जितनी उत्तम आज्ञा का पालन होगा उतना सुख मिलेगा । अपने छोटे बड़े प्रत्येक मंदिर में भी प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा का पत्र होना आवश्यक है, यदि आज्ञापत्र न हो तो दान धर्मादिक वहाँ न करें ।

प्रत्येक मंदिर के कोठारी अथवा उनके प्रतिनिधिउस गाँव के बड़े मंदिर में अन्न या रुपया, या अन्यत्र जो भी पदार्थ दान करेंगे पक्की रसीद प्राप्त करलें ।

महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री वर्तमान में अमेरिका में बायर मंदिर का मूर्ति प्रतिष्ठा हेतु गये है। वहाँ से फोन द्वारा उत्तराखंड के मृतयात्रिको की शांति तथा फंसे यात्रिकों की सुरक्षा हेतु श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना की है। (शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी)

सर्वोपरि छपैया में कथा पारायण का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री के आशीर्वाद से सां. कमलाबा, सां. कोकिलाबा तथा सां. उषाबा (सुरेन्द्रनगर) की प्रेरणा से कीर्तिबहन शाह (कपडवंज) की तरफ से सर्वोपरि सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण की प्राकट्यभूमि छपैया में श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी (मूळी) के वक्तापपर हुई थी। इस प्रसंग पर कथा श्रवण दर्शन हेतु सुरेन्द्रनगर से ३५० जितने हरिभक्तों ने ट्रेन द्वारा पधारे थे। कथा प्रसंग में आनेवाले प्रसंग श्रीहरि प्राकट्योत्सव, फुल दोलोत्सव, श्री रामप्रतापजी का विवाह आदि धूमधाम से मनाया गया। महंत ब्र. स्वा. वासुदेवानंदजीने हरिभक्तों का सुंदर स्वागत किया। समग्र आयोजन कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी के मार्गदर्शन अनुसार किया गया था। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

एप्रोच बापुनगर मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल परिवार के आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी की प्रेरणा से संतो द्वारा बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराज का वैशाख शुक्ल पभ-३ से सुंदर चंदन के वस्त्रो के दर्शन ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-१५ तक करवाये गये। ता. २२-६-१३ को केशर स्नान दर्शन करवाये गए। ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-१० डीहरि का अंतर्धान तिथि के उपलक्ष में सुबर ८ से ११ महामंत्र धुन की गयी। (गोरधनभाई सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षदकोलोनी (बापुनगर) का तीसरा पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा प.भ.दासभाई की प्रेरणा से तथा हरिभक्तों के सुंदर सहयोग से श्री स्वामिनारायण मंदिर का तीसरा पाटोत्सव ता. २-६-१३ को मनाया गया।

इस प्रसंग पर प्रातः ६-३० से रात्री के ११-३० तक समूह महापूजा, अन्नकूट, अखंड धुन, प्रसाद, प्रासंगिक सभा तथा धीरजाख्यान की कथा का आयोजन किया गया। शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने कथामृत का पान करवाया।

प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी सुबह बहनो को आशीर्वाद देने पधारी। सभा प्रसंग में प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे। प्रसंग के मुख्य यजमानश्री अरजणभाई देसाई तथा श्री कस्तुरचंद झिंझुवाड़िया आदि थे। नारायणघाट मंदिर महंत स.गु.शा. पी.पी. स्वामीने मार्गदर्शन दिया।

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री की शुभ आज्ञा से तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा बड़ी गादीवालाश्री के शुभ आशीर्वाद से ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-१० श्रीहरि की अंतर्धान तिथि के उपलक्ष में बहनो के मंदिर में १ से शाम के ७ तक महामंत्र धुन का आयोजन किया गया। (गोरधनभाई सीतापरा)

संप्रदाय का सर्वप्रथम मंदिर अमदावाद में श्री स्वामिनारायण मंदिर का जीर्णोध्धार कार्य में सेवा करने के संदर्भ में

अपने इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानने संप्रदाय का सर्वप्रथम मंदिर अमदावाद कालुपुर में स.गु. आनंदानंद स्वामी से करवाया था। समय के प्रवाह के साथ इस मंदिर का निर्माण कार्य दो दशक में पूर्ण हुआ था इस प्रसादीभूत मंदिर में फेर फार भले हो लेकिन स्थिति वही रहनी चाहिये इस आशय से शिल्प स्थापत्य का ध्यान रखकर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पुरातत्व विभाग के विशेषज्ञो द्वारा सलाह प्राप्त करके जीर्णोध्धार करने का आदेश दिया है। राजस्थान के गुलाबी पत्थरो पर गढाई का कार्य कराकर लगाने का कार्य चल रहा है। संप्रदाय के सर्व प्रथम मंदिर का सिंहासन भी सुवर्ण वेष्टित किया जा रहा है। जिस मंदिर में स्वयं श्रीहरिने अपनी वाहों में श्री नरनारायणदेव को भरकर प्रतिष्ठित किये हों वह मूर्ति कितनी प्रतापी होंगी। अपने कल्याण के लिये तथा सदा सुख प्रदान के लिये प्रभु ने श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा की थी। इस भगीरथ कार्य में सुवर्णदान, रुपये का नगद दान, अथवा किसी प्रकार से अन्य सेवा कार्य करके हरिभक्त अपने जीवन को धन्य बनायें। इस सेवा को श्रीहरि अपनी स्मरणिका में लेंगे। इसलिये अमदावाद मंदिर के कोठार में अपना कीमती दान करके पक्की रसीद प्राप्त करलेंगे। ऐसा अवसर जीवन में पुनः नहीं आयेगा। इसका अवसर चूकते नहीं देना, अहोभाग्य से वंचित न रहजांय, इसलिये इसका लाभ अवश्य लीजिये।

श्री स्वामिनारायण मंदिर हरिद्वार का ८ वाँ पाटोत्सव

पुण्य पवित्र भारत भूमि के उत्तर स्थित हिमलाय की गोद में से निकलने वाली गंगाजी के किनारे तीर्थोत्तम हरिद्वार श्री स्वामिनारायण मंदिर का ८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ आज्ञा-आशीर्वाद से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के हर्ष के साथ, मंदिर के महंत शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी की प्रेरणा से कोठारी स्वामी हरिप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से प.भ. अमीचंदभाई नाथाभाई प्रजापति (हिंमतनगर) परिवार यजमान पद पर वैशाख शुक्ल पक्ष-१५ को ता. २५-५-१३ को धूमधाम से मनाया गया।

इस प्रसंग के उपलक्ष में ता. २४-५-१३ को गंगाजी के पवित्र प्रवाह में से जल की मटली भरकर ''जलपाना'' धूमधाम से निकाली गयी। पाटोत्सव के दिन सुबह ७ बजे श्री कमलेशभाई गोर द्वारा यजमान अमीचदंभाई, चि. रविकुमार के चि. स्नेह तथा हिरेनभाई तथा श्री मनुभाई तथा चि. संदीपकुमार जीज्ञेश तथा दिनेशकुमार आदिने महापूजा का लाभ लिया था। उसके बाद ठाकुरजी को षोडशोपचार महाभिषेक श्रृंगार आरती तथा अन्नकूट दर्शन हुए।

प्रासंगिक सभा में स.गुशा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी (वडनगर महंतश्री) ने हरिद्वार तीर्थ के धर्मकुल तथा पाटोत्सव की महिमा कही। यजमान परिवार ने महंत शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी, शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी, को.स्वा. हरिप्रकाशदासजी तथा अन्य संतो पार्षदो का फुलहार से स्वागत किया। अंत में महंत शा.स्वा. आनंदजीवनदासजीने यजमान परिवार का आभार व्यक्त करके आगामी शताब्दी महोत्सव की धूमधाम से मनाने की घोषणा की। सभा संचालन स.गु.सा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी (वडनगर महंतश्री) ने किया।

(कोठारी शा.स्वा. हरिप्रसाददासजी, हरिद्वार)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क रजत जयंती महोत्सव

श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क आज से २५ वर्ष पहले इ.स. १९८८ में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों से नवनिर्मित श्री स्वामिनारायणमंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा धूमधाम से हुई थी। जिसे वर्तमान में २५ वर्ष पूर्ण होने पर प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने शुभ आज्ञा से तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षता में ता. १५-५-१३ से ता. १९-५-१३ तक रजत जयंती महोत्सव का आयोजन किया गया था। इस प्रसंग के उपलक्ष में श्रीमद् सत्संगी जीवन पारायण, श्रीहरियाग, महापूजा, अभिषेक, छप्पन भोग, अन्नकूट, शोभायात्रा आदि कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

समग्र प्रसंग में धर्मकुल परिवारने पधारकर दर्शन-आशीर्वाद प्रदान किये। संतो में पू. स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी पू. देव स्वामी, पू.पी.पी. स्वामी (नारायणघाट) आदि संत मंडलने पधारकर मार्गदर्शन कारो को प्रोत्साहित किया पू. शा. राम स्वामी के वक्तापद पर कथा हुई।

जीवराजपार्क तथा आसपास के हरिभक्तोने यजमान की सुंदर सेवा की। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा महिला मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी। इस प्रसंग के दर्शन इलेकट्रोनिक मिडिया के माध्यम से तथा वेबसाईट से भी करवाये। (भरत ठक्कर, जीवराजपार्क)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२३) निर्जला एकादशी मनायी गयी

श्री स्वामिनारायण मंदिर (से.-२३) में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा-आशीर्वाद से, सत्संग की भजन भक्ति की व्रतोत्सव की प्रवृतिया चल रही है।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-११ निर्जला एकादशी के जलदान की विशेष महिमा है। इस दिन भगवान को जल भरे हुई मटकी अर्पण की थी। हरिभक्तोंने निर्जला उपवास के साथ सभा में स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी के पदो का समूह कीर्तन किया था। (विनोद सोनी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर महादेवनगर १८ वाँ पाटोत्सव तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री का ४१ वाँ प्राकट्योत्सव के उपलक्ष में अखंड धून का आयोजन किया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा पू.पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर महादेवनगर का १८ वाँ पाटोत्सव ता. ११-६-१३ को प.भ. पटेल मगनभाई डुंगरशीभाई के यजमान पद पर सम्पन्न हुआ। इस प्रसंग पर ता. ११-६-१३ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। बहनो के मंदिर तथा भाईओं के मंदिर में ठाकुरजी की आरती करके सभा में बिराजे थे समस्त सभा को एकता के साथ भगवान का भजन तथा धर्मादा देने का

अनुरोधकरके आशिर्वाद दिये । इस प्रसंग पर लक्ष्मजीवनदासजी (एप्रोच) आनंद स्वामी आदि सतंगण पधारे थे । सभा संचालन शा.स्वा,. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल)ने किया था ।

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महारजाश्री का ४१ वें प्राकट्योत्सव के उपलक्ष्य में संत-हरिभक्त गण उत्साहित थे । इस उपलक्ष में १४१ मिनिट अखंड महामंत्र धून ता. २६-६-१३ रविवार को श्री स्वामिनारायण मंदिर महादेवनगर में रविवार को श्री स्वामिनारायण मंदिर में की गयी । ७०० जितने धर्मकुल प्रेमी हरिभक्तों ने धून में भाग लिया । (शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी, कोटेश्वर गुरुकुल)

जेदलपुर में महिला शिबिर का आयोजन

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से जेतलपुर में भव्य महिला शिबिर का आयोजन किया गया । कुल १२०० जितनी बहनोने प्रसंग का लाभ लिया । समग्र आयोजक जेतलपुर की सां.यो. बच्चीबा तथा उनके शिष्य मंडलने किया था । अहमदाबाद तथा जेतलपुर के सां.यो. बहनोने सत्संग की वार्ता की । समग्र संचालन सां.यो. नर्मदाबाने किया था । अंत में प.पू. गादीवालाश्रीने आशीर्वाद दिया । तमाम व्यवस्था जेतलपुर के महंत स.गु. के.पी. स्वामीने की थी । (शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणेकपुर जेतलपुर में पदयात्रा (पटेल) तथा कथा पारायण का आयोजन किया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत स्वामी गुरुप्रसाददासजी तथा स.गु. महंत स्वामी आनंदप्रसादासजी (कांकरिया) की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल माणेकपुर (पटेल) द्वारा १०८ कीर्तन भक्ति तथा सत्संग सभा की पूर्णाहुति प्रसंग पर ''श्री अष्ठोतरशत भजन समापन'' महोत्सव के उपलक्ष में ''श्रीहरि ऐश्वर्य दर्शन'' पंचान्ह पारायण स.गु.शा.स्वा. यज्ञप्रकादासजी (काकंरिया) के वक्तापद पर हुई । इस प्रसंग में समूह महापूजा के आयोजन में ११५ भक्तोने लाभ लिया था । ता. ७-६-१३ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने ठाकुरजी की अन्नकूट आरती करके कथा की पूर्णाहुति की ।

जेतलपुर की पदयात्रा ता. ८-६-१३ को प्रातः माणेकपुर के जेतलपुर पद यात्रा का आरंभ किया गया । कई हरिभक्त गांधीनगर (सेक्टर-२) से पदयात्रा में जुड़े थे । श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद श्री बालस्वरुपश्री कष्टभंजनदेव के दर्शन किये थे । जहाँ महंत स्वामी तथा आनंद स्वामीने पदयात्रियों के लिए भोजन आदि की व्यवस्था की थी । श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के दर्शन किये । जहाँ महंत स.गु.शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, पू. पी.पी. स्वामी तथा महंत के.पी. स्वामीने पदयात्रियों का सन्मान करके उतारे की व्यवस्था की । महंत स्वामीने प्रत्येक पदयात्री को जेतलपुर महिमा पुस्तक तथा कीर्तन की सीडी भेट स्वरुप दी ।

(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, माणेकपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया श्रीमद् भागवत पारायण का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण म्युजियम उद्घाटन के उपलक्ष में प.पू. बड़े महाराजश्री के मुख से प्रारंभ हुए श्री जनमंगल नामावलि विवेचक पूर्णाहुति निमित पर श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया में प्रथम बार श्रीमद् भागवत पारायण का आयोजन ता. १२-६-१३ से १६-३-१३ तक श्री स्वामिनारायण सत्संग समाज तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ ।

श्री जनमंगल महोत्सव के अंतर्गत भव्य पोथीयात्रा नंद संतो द्वारा रचित कीर्तन रास के साथ आयोजन किया गया । कथा में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव का सुंदर आयोजन गिया गया । इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री भी पधारे थे । बहनो को दर्शन देने प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा अंतिम दिवस प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे । सभा में नरनारायणदेव युवक मंडलने मोगरा के १०००० पुष्पों का हार पहनाया । इस प्रसंग पर पू. शा.पी.पी. स्वामी (नारायणघाट)ने सुंदर मार्गदर्शन दिया ।

(चेतन पटेल, श्री नरनारायणदेव युवक मंडल)

बालवा गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वे प्रागट्योत्सव के उपलक्ष में वृक्षारोपण का कार्यक्रम किया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के ४१ वें प्रागट्योत्सव प्रसंग के उपलक्ष में अनेक सामाजिक कार्यक्रम किए गये । बालवा गाँव के हरिभक्तों द्वारा वृक्षारोपण के कार्यक्रम में ११०० वृक्ष के पोधे जेसे कि बाजायती, पेरु, उगम, जामुन आदि के पौंधो का फ्री में

वितरण किया गया । समग्र आयोजन बालवा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा बाल मंडल द्वारा किया गया । साथ में जनमंगल पाठ तथा मंत्र लेखन की भी शुरुआत की गयी ।

(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, बालवा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर प्रांतिज का १२६ वाँ पाटोत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल परिवार के आशीर्वाद से यहाँ के महंत स्वामी माधवप्रसाददासजी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा हरिभक्तों के सहयोग से प्रांतिज मंदिर में बिराजमान ठाकुरजी का १२६ वाँ पाटोत्सव ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-२ ता. १०-६-१३ को प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ सानिध्य में तथा संतो की शुभ निश्रा में प.भ. दिपकभाई दशरथभाई मोदी परिवार के यजमान पद पर विधिपूर्वक मनाया गया । ९-०० बजे बड़े महाराजश्री पधारकर ठाकुरजी की आरती करके सभा में बिराजे थे । सभा संचालन शा. घनश्याम स्वामी (माणसा) ने किया था । प.पू. बड़े महाराजश्री ने अन्नकूट आरती करके हरिभक्तों को आशीर्वाद दिये । (कोठारीश्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर आनंदपुरा पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से हरिभक्तों के सहकार से श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. २०-५-१३ को ठाकुरजी का पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया । इस प्रसंग पर शा.स्वा. माधवप्रियदासजी (सिध्धपुर) ने कथावार्ता करके अन्नकूट की आरती की । (कोठारीश्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गोठीब सुवर्ण कलश महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा, समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद तथा स.गु.शा.स्वा. निर्गुणदासजी की प्रेरणा से पंचमहाल के झाड़ी देश के सत्संग के मुख्य गाँव गोठीब श्री स्वामिनारायण मंदिर का द्वितीय पाटोत्सव तथा सुवर्ण कलश तथा ध्वजदंड स्थापन महोत्सव ता. १२-६-१३ से १६-६-१३ तक धूमधाम से मनाया गया । इस प्रसंग के उपलक्ष में श्रीमद् भक्त चिंतामणी ग्रंथ की पंचान्ह पारायण शा.स्वा. ब्रह्मविहारीदासजी (चराड़वा महंतश्री) के वक्तापद पर सम्पन्न हुई । इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री ने पधारकर सुवर्ण कलश तथा ध्वजदंड का पूजन एवं महापूजा की पूर्णाहुति में श्रीफल का होम किया था । ठाकुरजी का अभिषेक क्लश नगरयात्रा, अन्नकूट आदि जैसे कार्यक्रम किये गए । शा.स्वा. सत्यप्रकाशदासजी (मूली) ने मार्गदर्शन प्रदान किया । (जीगर पटेल)

धरमपुर (ता. कड़ी) गाँव में प.पू. बड़ी गादीवालाश्री की पधरामणी

कडी तालुका के धरमपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री पधारी थी । ठाकुरजी की आरती उतारकर भक्तों को आशीर्वाद प्रदान किये । वहाँ से धर्मकुल प्रेमी नानीबा रामजीभाई तवकीणा के वहाँ उनकी वृद्धावस्था के कारण दर्शन प्रदान करने पधारी थी ।

(कंचनबहन पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा

श्रीहरि की असीम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से महंत शा.स्वा. हरिॐप्रकाशदासजी तथा शा.स्वा. माधवप्रसाददासजी स.गु. हरिप्रकाशदासजी स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. २२-६-१३ को बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराज का केशर स्नान करवाया गया, श्रीहरि की अंतर्धान तिथि ज्येष्ठ शुक्लपक्ष-१० का तथा उत्तराखंड के यात्रिको की शांति के लिए महामंत्र धून कि गयी । स.गु.शा. माधव स्वामीने श्रीहरि लीला चरित्र कथा का सुदंर पान करवाया । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से अहमदाबाद कालुपुर मंदिर में स्कीम कमिटी में नियुक्त सभा प.भ. रसिकलाल अंबालाल पटेल (मोखासण) का स्वागत किया गया । प.भ. घनश्यामभाई पटेल (कुवा) तथा प.भ. जयंतीभाई पटले (नेशनल) आदि भक्तोने तथा महंत स्वामी की देव-सत्संग की निष्ठा में तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा में रहकर सभी सत्संग प्रवृत्ति सुंदर होती है ।

(घनश्यामभाई पटेल, नारणपुरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर झुलासण पाटोत्सव-श्री हनुमानजी गणपतिजी महाराज की प्राण प्रतिष्ठा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल परिवार के आशीर्वाद से तथा जेतलपुर के स.गु. महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से हरिभक्तों के सहयोग से श्री स्वामिनारायण मंदिर झुलासण में बिराजमान ठाकुरजी का पाटोत्सव तथा श्री हनुमानजी गणपतिजी की प्राण प्रतिष्ठा की गयी ।

इस प्रसंग के उपलक्ष में ता. १-६-१३ से ५-६-१३

तक श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण पू.स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकादासजी (जेतलपुर)ने किया । त्रिदिनात्मक विष्णुयाग का आयोजन किया गया । ता. ५-६-१३ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। उनके वरद् हाथो से ठाकुरजी का पाटोत्सव, श्री हनुमानजी गणपतिजी प्रतिष्ठा, यज्ञ तथा पारायण की पूर्णाहुति हुइ ।

इस प्रसंग पर महंत श्री के.पी. स्वामी, शा. भक्ति स्वामी आदि प्रेरणारुप थे । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा उत्तम थी ।(शा.भक्तिनंदनदास तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल)

श्रीहरि के प्रसादी के आदरज गाँव में प्रथम पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से श्रीहरिने संप्रदाय में जहाँ प्रथम अन्नकूटोत्सव किया था ऐसे प्रसादी के तीर्थधाम श्री स्वामिनारायण मंदिर आदरज का प्रथम पाटोत्सव ता. १३-६-१३ को संपन्न हुआ । इस प्रसंग के उपलक्ष में श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचान्ह पारायण शा.स्वा. सत्यसंकल्पदासजी (मूली) के वक्तापद पर सम्पन्न हुई । संहिता पाठ शा.स्वा. बालस्वरुपदासजी (मूली)ने किया । प.पू.ध.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा से बापुनगर की सत्संग महिला मंडलने अन्नकूट की सेवा की । ता. १३-६-१३ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत पार्षद मंडल के साथ पधारे थे । उनके वरद् हाथो से ठाकुरजी का पाटोत्सव संपन्न हुआ । पाटोत्सव के मुख्य यजमान पटेल मुकेशभाई (धमासणा) थे । पारायण के यजमान पटेल नारायणदास खुशालदास (मोखासण) थे । प्रसंग के आयोजक स्वामी रामकृष्णदासजी थे । धमासणा के हरिभक्तोंने सुंदर सेवा की । (कोठारीश्री महोतजी ठाकुर)

न्यु राणीप श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा

सर्वोपरि भगवान स्वामिनारायण को श्रीनगर शहर बहुत प्रिय था । यहाँ हरि के निष्ठावान आश्रितो की लाखो की संख्या है । इसीलिए प्रत्येक वर्ष एक या दो नए मंदिर श्री नरनारायण गादी स्थान के स्थापित होते हैं । प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजी, स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नाराटणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से तथा न्यु राणीप के समस्त सत्संग, श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के साथ-सहकार से श्री नरनारायणदेव के श्री स्वामिनारायण मंदिर, आनंद पार्टी प्लोट रोड, आलोक फ्लेट के सामने, तैयार होते ही ता. ११-६-१३ को प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों से मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा विधिपूर्वक सम्पन्न हुई । जिस में कई भक्तोने यजमान पद का लाभ लिया । सभी भक्तों की मनोकामना सिध्धहुई ।

(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, न्यु राणीप)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में कथा पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से मूली श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के सांनिध्य में मूली धाम के अ.नि.स.गु.शा.स्वा. गोपीवल्लभदासजी अ.नि. त्यागवल्लभदासजी, अ.नि. स्वा. माधवप्रियदासजी अ.नि. स्वा. गोविंदप्रसाददासजी की स्मृति में उनके शिष्य परंपरा के पुजारी स्वामी जयप्रकाशदासजी तथा स.गु.स्वा. चंद्रप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा मंदिर के महंत स्वा. श्यामसुंदरदासजी तथा कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी के मार्गदर्शन में ता. ३०-४-१३ से ६-५-१३ तक श्रीमद् सत्संगिजीवण समाह पारायण का आयोजन स.गु.शा.स्वा. श्रीजीप्रकासदासजी के वक्तापद पर हुआ था । कथा में आने वाले सभी उत्सव धूमधाम से मनाये गये थे । इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी बहनो के विशेष आमंत्रण पर पधारकर आशीर्वचन का सुख प्रदान की थी । ता. ६-५-१३ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत-पार्षदो के साथ पधारे थे । सर्वप्रथम ठाकरुजी की अन्नकूट की आरती उतारकर धुन की आरती उतारकर सभा में बिराजमान हुए थे । सभा में अपने प्रवचन के समय सभी को हार्दिक आशीर्वाद देते हुए प.पू. महाराजश्रीने धार्मिक विधिमें सचेत रहने के लिए कहा था । सभा संचालन सत्यप्रकाशदासजीने किया था । (शैलेन्द्रसिंह झाला)

नरनारायण नगर मंदिर (हलवद) पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से नरनारायणनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. १४-६-१३ को ७ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । सभा में साधु श्रीजी स्वरुपदासजीने मूली धाम में प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ सानिध्य में गुरुपूर्णिमा महोत्सव धूमधाम से मनाया जायेगा ऐसी उद्धोषणा की थी । इस लिए सभी हरिभक्त इस अवसर का लाभ लेने अवश्य पधारें ।

(अनिलभाई दूधरेजिया ध्रांगध्रा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बरवाला (मोरबी)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. ९-६-१३ को बरवाला गाँव में सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिस में स्वामी भक्तिहरिदासजी तथा उनके शिष्य इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। जिस में देव, आचार्य का वफादार रहने के लिये सभी को कहा गया। इसके साथ गुरुपूर्णिमा के अवसर पर मूलीधाम में प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन है तो सभी भक्त जन दर्शन-पूजन का लाभ लेने अवश्य पधारे। बावरिया शांतिभाई इत्यादि हरिभक्तों की सेवा प्रेरणारुप थी। (अनिलभाई, ध्रांगध्रा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर रतनपर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु.स्वा. नरनारायणदासजी की प्रेरणा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ९ वें पाटोत्सव के उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिभूषण रात्रि कथा शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी के वक्तापद पर हुई थी। जिसके यजमान प.भ. बाबूभाई अडालजा थे। इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। ठाकुरजी की आरती उतारकर बिराजमान हुए और सभी को हार्दिक आशीर्वाद प्रदान किये। प.पू. महाराजश्रीने श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की स्थापना की थी। समग्र प्रसंग में के.पी. स्वामी तथा कालूभगत की सेवा सराहनीय थी। (श्री नरनारायणदेव युवक मंडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर भराडा मूर्ति प्रतिष्ठा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मूली मंदिर के महंत स्वामी शा. नारायणप्रसाददासजी की प्रेरणा से श्रीजी महाराज के चरण कमल से अंकित गाँव भराडा में पुरुषो के मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव ता. २४-५-१३ से ३०-५-१३ तक धूमधाम से मनाया गया था। इस प्रसंग पर श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण का आयोजन किया गया था। जिस के वक्ता स.गु.शा.स्वा. भक्तिनंदनदसाजी थे। अपनी सुमधुर शैली में उत्तम कथा का रसपान कराये। ता. २९-५-१३ के सायंकाल ठाकुरजी की भव्य शोभायात्रा निकाली गयी थी। जिस में गाँव के सभी हरिभक्त भाग लिये थे। ता. ३०-५-१३ को प.पू. आचार्य महाराजश्री भराडा गाँव पधारे थे। उस समय धूमधाम के साथ दिव्य स्वागत गिया गया था। इसके बाद पुरुषो के मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा का आयोजन किया गया था। जिस में सर्वोपरि स्वामिनारायण भगवान तथा विघ्न विनायक गणपतिजी की प्रतिष्ठा भी गयी, बाद में यज्ञ नारायण की पूर्णाहुति हुई थी। बाद में प.पू. आचार्य महाराजश्री सभा में पधारे थे। यहाँ पर पू. महाराजश्री का पूजन-अर्चन - आरती इत्यादि कार्य संपन्न किये गये थे। यजमानो द्वारा संतो का पूजन किया गया था। प.पू. आचार्य महारजाश्री ने सभी भक्तों का सन्मान किया था। अनेको धाम से संत-महंत पधारे हुये थे। अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्री ने सभी बहनो को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। अनेको धाम से सांख्ययोगी बहने भी पधारी थी। समग्र महोत्सव का संचालन शा.स्वा. हरिप्रकाशदासजी ने किया था। समग्र आयोजन शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी (सायला गुरुकुल) तथा भराडा के सभी भक्तों के सहयोग से संपन्न हुआ था। युवानो की सेवा सराहनीय थी। इस में विशेषरुप से महिलाओं की सेवा प्रशंसनीय थी।

(शा.आत्मप्रकाशदासजी, सायला)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ की सत्संग प्रवृति सुंदर चल रही है।

जून मास में विविधचेप्टरों से संत यहाँ आकर कथा का लाभ दिये थे। अपने सुप्रसिद्ध विद्वान संतशिरोमणी शा.स्वा. निर्गुणदासजी तथा ज्ञान स्वामी के आमंत्रण पर बायर की मूर्ति प्रतिष्ठा में हरिभक्त पधारे थे जिस में सभी देव दर्शन तथा आचार्य महाराजश्री के साथ समस्त धर्मकुल का दर्शन करके जीवन की धन्यता का अनुभव किये थे। वोशिंग्टन डी.सी. में भी मूर्ति प्रतिष्ठा में पधारने के लिये अमदावाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा शा.स्वा. रामकृष्णदासजीने सभी हरिभक्तों को कहा था। शा. राम स्वामीने सुदंर कथा का लाभ दिया था। प्रेसीडेन्ट श्री जगदीशभाईने उपरोक्त दोनो मंदिरो की मूर्ति प्रतिष्ठा में सेवा का लाभ लेने हेतु निवेदन किया था। प.पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षता में अगस्त मास में शिकागो के युवा शिबिर में भाग लेने के लिये विशेष अनुरोधकिया गया था।

(वसंतभाई त्रिवेदी)

कलिवलेन्ड श्री स्वामिनारायण मंदिर का पंचम वार्षिक पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था

इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से अमेरिका के कलिवलेन्ड श्री स्वामिनारायण मंदिर में बिराजमान श्री घनश्याम महाराज, श्री राधाकृष्णदेव, श्री नरनारायणदेव, श्री लक्ष्मीनारायणदेव इत्यादि देवों का पंचम वार्षिक पाटोत्सव ता. १६ जून से २३ जून तक समग्र धर्मकुल तथा

संतो की उपस्थिति में धूमधाम से मनाया गया था।

पाटोत्सव अन्तर्गत श्रीमद् रामचरितमानस सप्ताह का भी आयोजन किया गया था। जिसके वक्ता पद पर संप्रदाय के नवयुवान कथाकार शा.स्वा. वासुदेवचरणदासजी थे। कथा के अन्तर्गत ता. १८ जून को मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम का जन्मोत्सव तथा २० जून को आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज का जन्मोत्सव प.पू. बड़े महाराजश्री की उपस्थिति में मनाया गया था।

ता. २२ जून को मारुति यज्ञ का आयोजन किया गया था। जिसमें ३५ परिवारने भाग लिया था। पूर्णाहुति के अवसर पर नवयुवानों ने सांस्कृतिक प्रौग्राम प्रस्तुत किया था।

ता. २३ जून प्रातः काल मंदिर में बिराजमान ठाकुरजी का अभिषेक प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों संपन्न हुआ। दोपहर में पूर्णाहुति के बाद भावि आचार्य लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से अन्नकूट की आरती की गयी थी।

इस पंचम पाटोत्सव के मुख्य यजमान श्री गिरीशभाई तथा दीपिका बहन पटेल परिवार था। कथा के मुख्य यजमान डॉ. वालजीभाई तथा मीनाक्षीबहन थे।

बहनों की सेवा सराहनीय थी। सात दिन तक आगन्तुक सभी मेहमानो के भोजन की व्यवस्था की गयी थी। इसके साथ कलिवलेन्ड मंदिर के प्रमुख प.भ. श्री प्रकाशभाई पटेल तथा कमेटी के अन्य सदस्य एवं हरिप्रकाश स्वामी, मंदिर के पुजारी श्रीजीस्वरुप स्वामीने महोत्सव की सुंदर व्यवस्था की थी।

महोत्सव में पू. बडे पी.पी. स्वामी, ब्र. पवित्रानंदजी, सर्वेश्वर स्वामी, घनश्याम स्वामी, राम स्वामी, व्रज स्वामी, स्वयंप्रकाश स्वामी, नरनारायण स्वामी, विवेक स्वामी, वनराज भगत, कनु भगत इत्यादि सभीने दर्शन तथा आशीर्वाद का लाभ दिया था।

श्री स्वामिनारायण अंक न मिलने की शिकायत

श्री स्वामिनारायण मासिक प्रति मासकी ११ ता. को नियमित पीनकोड के अनुसार सोर्टींग करके पोस्ट द्वारा प्रेषित किया जाता है। २० ता. तक अंक न मिले तो स्थानिक पोस्ट में जानकारी सभी को करनी चाहिये। यदि स्टोक में अंक होगा तो आपको शिकायत अंक भेजा जायेगा। ग्राहक नं. के विना शिकायत स्वीकार्य नहीं होगी।

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

अमदावाद-मेमनगर : प.भ. कांतिभाई मोहनलाल पटेल ता. ९-६-२०१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

बलोल-भाल : प.भ. गोविंदभाई मोतीभा सुर के पुत्र श्री दीपूभाई के चि. पुत्र महावीरसिंह (उम्र १९ वर्ष) ता. ३-६-२०१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

माणसा : प.भ. धुलीबहन डाह्याभाई हरगोवनदास ता. २५-५-२०१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

कलोल : प.भ. शिवाभाई शंकरदास पेटल (उम्र ७५ वर्ष) ता. १३-६-२०१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

कलोल : प.भ. जयंतीभाई अंबालाल पटेल की माताजी मणीनबह (उम्र ८० वर्ष) ता. १७-५-२०१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुइ है।

नांदोल : प.भ. रतिलाल अंबालाल पटेल (उम्र ७८ वर्ष) ता. ३१-५-२०१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

नवा नरोडा : प.भ. मालवीया नानुबहन मनजीभाई ता. २४-५-२०१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुइ है।

पेथापुर : प.भ. गज्जर रजनीकांत रणछोडलाल ता. २५-६-२०१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રીના ૪૧માં જન્મોત્સવ (દશેરા) નિમિત્તે વિવિધ ગામો - મંદિરોમાં કાર્યક્રમો

(१) प्रांतिज मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट की आरती उतारते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री । (२) भाट गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर विश्रांति भवन का खात पूजन करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री साथ में भुज मंदिर के महंत स्वामी, स्वा. भक्तिवल्लभदासजी और जादवजी भगत । (३) विराटनगर सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री । (४) उत्तराखंड में विनाशक प्राकृतिक आपदा के अवसर पर बद्रिनाथ धाम के अपने मंदिर ने भी हजारों लोकों को आश्रय दिया था तथा रहने खाने की समुचित व्यवस्था मंदिर के महंत गोलोक स्वामीने की थी । (५) हलवद में एक वर्ष की अखंड धून में दिव्य आनंद का अनुभव करते हुए हरिभक्त । (६) प.पू. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ४१ वाँ जन्म दिन के उत्सव प्रसंग पर नारायणघाट मंदिर में प्रथम सभा में स.गु. महंत स्वा. हरिकृष्णदासजी, स्वा. देवप्रकाशदासजी संत मंडल के साथ । (७) नवा वाडज तथा कर्म शक्ति (बापूनगर) मंदिर में सत्संग सभा । (८) महादेवनगर मंदिर में वचनामृत का समूह पारायण तथा १४१ घन्टे की अखंड धून । (९) बालवा में ४१००० वृक्षारोपण के लिए विनामूल्य के वितरण । (१०) माणेकपुर में कथाप्रसंग पर नरनारायण युवक मंडल के युवानो प.पू. महाराजश्री के साथ ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month
under postal Regd. No. GUJ. 581/12-14 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2014

गुरु पूर्णिमा गुरु पूजन महोत्सव

ता. २२-७-१३ को
श्री नरनारायणदेव देश के भावि आचार्य
प.पू. लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी का गुरुपूजन
प्रातः ७-३० बजे ।
स्थल : श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अमदावाद ।

ता. २२-७-१३ को
श्री नरनारायणदेव देश के पूर्व पीठाधिपति धर्ममार्तण्ड प.पू.ध.धु.
बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी का गुरुपूजन
प्रातः ८-०० बजे ।
स्थल : श्री स्वामिनारायण मंदिर, मूली ।

श्री नरनारायणदेव ताबाना शिकागो मंदिर का

१५ वाँ पाटोत्सव महोत्सव

रविवार, ४ अगस्त-२०१३

Midwest Shree Swaminarayan Temple (I.S.S.O.)
21W 710 Irving Park Road, Itasca, IL 60143 (U.S.A.)

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीके वरद् हस्ते संपन्न होगा
श्री स्वामिनारायण मंदिर वोशिंग्टन (डी.सी.)

मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

रविवार १, सितम्बर-२०१३

International Swaminarayan Satsang Organization
(Under Shree Narnarayan Dev Gadi - Ahmedabad)
Shree Swaminarayan Temple
Maryland D.C. Area 115 COCKEYS MILL ROAD
REISTERSTOWN MD 21136
Temple Phone - (410) 526-1008
Email. : issomddc@gmail.com

श्री नरनारायणदेव देश के पीठाधिपति
धर्ममार्तण्ड प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का

४१ वाँ जन्मोत्सव

ता. १४-१०-१३ रविवार (दशहरा) के दिन सायंकाल ४-३० बजे
स्थल : गांधीनगर
आयोजक : श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट
तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा समग्र सत्संग समाज अमदावाद की तरफ से
स्वा. देवप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. पी.पी. स्वामी (महंत) नारायणघाट

Jagadish Offset
Praful Kharsani